

UP Board Class 10 Sanskrit - 818(BU) - 2025 Question Paper with Solutions

Time Allowed :3 Hours | Maximum Marks :70 | Total Questions :11

General Instructions

Read the following instructions very carefully and strictly follow them:

1. प्रारंभ के 15 मिनट परीक्षाओं को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं ।
2. प्रश्न-पत्र दो खण्डों, खण्ड 'A' तथा 'B' में विभाजित है ।
3. खण्ड 'A' तथा 'B' दो उपखंड, उपखंड (क), (ख) में विभाजित है ।
4. प्रश्न-पत्र के खण्ड 'A' में बहुविकल्पीय प्रश्न हैं, जिनमें सही विकल्प चुनकर ओ.एम.आर. सीट में नीले अथवा काले बॉल प्वाइंट पेन से सही विकल्प वाले गोलों को पूर्ण रूप से भरें ।
5. खण्ड 'A' में बहुविकल्पीय प्रश्न हेतु उर्ध्वत प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित है ।
6. ओ.एम.आर. सीट पर उत्तर अंकित किए जाने के पश्चात उसे काटे नहीं तथा इरेजर (Eraser) एवं डॉटनर (Whitener) का प्रयोग न करें ।
7. प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण उत्तर स्पष्ट अंक दिए गए हैं ।
8. खण्ड 'B' के प्रश्नों के सभी प्रश्न एक साथ उत्तरात्मक हैं । प्रश्न उपखंड नए पृष्ठ से प्रारंभ किया जाएगा ।
9. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

खण्ड - 'अ'

उपखण्ड - (क)

Comprehension Passage (for Questions 1 and 2)

प्रश्न संख्या 1 एवं 2 गद्यांश आधारित प्रश्न हैं। गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और उत्तर का चयन करें। रवीन्द्रनाथस्य जन्म कोलकाता नगरे एकषष्ट्यधिकषष्टादशशत तमे ख्रिष्टाब्दे मई मासस्य सप्तमे दिने (7 मई 1861) अभवत् । अस्य जनकः देवेन्द्रनाथः जननी शारदादेवी चास्ताम् । रवीन्द्रस्य जन्म एक सम्भ्रान्ते समृद्धे ब्राह्मण परिवारे जातम् ।

1. रवीन्द्रनाथस्य जन्म कस्मिन् नगरे अभवत् ?

- (A) कोलकाता नगरे
(B) पोरबन्दर नगरे

- (C) मुम्बई नगरे
(D) मद्रास नगरे

Correct Answer: (A) कोलकाता नगरे

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न दिए गए गद्यांश पर आधारित है। प्रश्न में पूछा गया है कि रवीन्द्रनाथ का जन्म किस नगर में हुआ था।

Step 2: Detailed Explanation:

गद्यांश की पहली पंक्ति में स्पष्ट रूप से लिखा है : "रवीन्द्रनाथस्य जन्म कोलकाता नगरे ... अभवत् ।"

इसका अर्थ है कि रवीन्द्रनाथ का जन्म कोलकाता नगर में हुआ था।

अतः, विकल्प (A) सही है।

Quick Tip

गद्यांश-आधारित प्रश्नों के उत्तर हमेशा गद्यांश में ही छिपे होते हैं। प्रश्न को ध्यान से पढ़ें और गद्यांश में संबंधित पंक्ति को खोजें।

2. रवीन्द्र जननी का आसीत् ?

- (A) शारदा
(B) राधा
(C) कस्तूरबा
(D) सीता

Correct Answer: (A) शारदा

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न भी दिए गए गद्यांश पर आधारित है। प्रश्न में पूछा गया है कि रवीन्द्रनाथ की माता कौन थीं।

Step 2: Detailed Explanation:

गद्यांश की दूसरी पंक्ति में लिखा है : "अस्य जनकः देवेन्द्रनाथः जननी शारदादेवी चास्ताम् ।"

इसका अर्थ है कि उनके पिता देवेन्द्रनाथ और माता शारदा देवी थीं।

अतः, विकल्प (A) सही है।

Quick Tip

संस्कृत गद्यांश में 'च' (और) का प्रयोग अक्सर जुड़े हुए शब्दों के बाद होता है, जैसे 'जनकः देवेन्द्रनाथः जननी शारदादेवी च' का अर्थ है 'पिता देवेन्द्रनाथ और माता शारदा देवी'।

3. सभापतिः कः आसीत् ?

- (A) अश्वत्थदेवः
- (B) इन्द्रदेवः
- (C) वरुणदेवः
- (D) ब्रह्मा

Correct Answer: (B) इन्द्रदेवः

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न संस्कृत साहित्य के सामान्य ज्ञान पर आधारित है। पौराणिक कथाओं में देवताओं की सभा का सभापति या राजा किसे माना गया है, यह पूछा गया है।

Step 2: Detailed Explanation:

विभिन्न पौराणिक कथाओं और संस्कृत ग्रंथों के अनुसार, देवों के राजा और उनकी सभा के अधिपति (सभापति) इन्द्रदेव हैं। उन्हें 'देवेन्द्र' या 'सुरेश' (देवताओं का ईश्वर) भी कहा जाता है।

अतः, दिए गए विकल्पों में से 'इन्द्रदेवः' सबसे उपयुक्त उत्तर है।

Quick Tip

संस्कृत साहित्य के प्रमुख पात्रों और उनके पदों (जैसे - इन्द्र देवों के राजा, कुबेर धन के देवता, यम मृत्यु के देवता) को याद रखना इस तरह के प्रश्नों को हल करने में मदद करता है।

4. मनुस्मृतौ धर्मस्य कति स्वरूपाः वर्णिताः ?

- (A) पञ्च
- (B) अष्ट
- (C) दश

(D) नव

Correct Answer: (C) दश

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न 'मनुस्मृति' नामक धर्मशास्त्र से है, जिसमें धर्म के लक्षणों या स्वरूपों की संख्या पूछी गई है।

Step 2: Key Formula or Approach:

मनुस्मृति (6.92) में धर्म के दस लक्षणों का वर्णन एक प्रसिद्ध श्लोक में किया गया है :

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

Step 3: Detailed Explanation:

उपरोक्त श्लोक के अनुसार, धर्म के दस लक्षण (स्वरूप) हैं: 1. धृति (धैर्य), 2. क्षमा, 3. दम (मन पर नियंत्रण), 4. अस्तेय (चोरी न करना), 5. शौच (पवित्रता), 6. इन्द्रिय-निग्रह (इन्द्रियों पर नियंत्रण), 7. धी (बुद्धि), 8. विद्या, 9. सत्य, 10. अक्रोध (क्रोध न करना)।

अतः, मनुस्मृति में धर्म के 'दश' (दस) स्वरूप वर्णित हैं।

Quick Tip

मनुस्मृति, गीता, और अन्य प्रमुख संस्कृत ग्रंथों के कुछ प्रसिद्ध श्लोकों और उनकी मुख्य शिक्षाओं को याद रखना परीक्षा में बहुत सहायक होता है।

5. कस्य मार्गः नास्ति ?

(A) वृक्षाः

(B) मानवाः

(C) महाभूतानि

(D) अदृष्टेः

Correct Answer: (D) अदृष्टेः

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न एक सूक्ति या दार्शनिक विचार पर आधारित हो सकता है। प्रश्न का अर्थ है "किसका मार्ग नहीं है?"।

Step 2: Detailed Explanation:

दिए गए विकल्पों का विश्लेषण करने पर:

(A) वृक्षा: (पेड़) - पेड़ों का मार्ग (गति करने का) नहीं होता, यह एक संभावित उत्तर है।

(B) मानवा: (मनुष्य) - मनुष्यों का मार्ग होता है।

(C) महाभूतानि (महान तत्व) - इनका भी अपना चक्र या मार्ग होता है।

(D) अदृष्टे: (अदृष्ट का / भाग्य का) - यह एक दार्शनिक विचार है। 'अदृष्ट' का अर्थ है जो देखा नहीं जा सकता, यानी भाग्य। भाग्य का कोई निश्चित, दृश्यमान मार्ग नहीं होता। यह सबसे गहन और सूक्ति के अनुकूल उत्तर प्रतीत होता है। "अदृष्टे: मार्गः नास्ति" का अर्थ होगा कि भाग्य का कोई पूर्वनिर्धारित, दृश्यमान पथ नहीं होता।

संभावित पाठ्यपुस्तक संदर्भों और प्रश्न की प्रकृति को देखते हुए, यह दार्शनिक व्याख्या सबसे उप-युक्त है।

Quick Tip

जब प्रश्न के कई संभावित उत्तर लगें, तो सबसे गहन और दार्शनिक अर्थ वाले विकल्प पर विचार करें, खासकर जब प्रश्न सूक्ति जैसा लगे।

6. "काव्यशास्त्रविनोदेन गच्छति धीमताम्" श्लोक की पंक्ति पूर्ण करें :

- (A) कालो
- (B) मुख्या
- (C) लकारो
- (D) पुत्रो

Correct Answer: (A) कालो

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न एक प्रसिद्ध संस्कृत सुभाषित (नीतिश्लोक) की पंक्ति को पूरा करने के लिए है।

Step 2: Detailed Explanation:

पूरा श्लोक इस प्रकार है :

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।

व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ॥

इसका अर्थ है : बुद्धिमान लोगों का समय (कालः) काव्य और शास्त्रों की चर्चा के आनंद में बीतता है, जबकि मूर्खों का समय व्यसन (बुरी आदतों), नींद या झगड़े में बीतता है।

अतः, रिक्त स्थान में 'कालो' शब्द आएगा।

Quick Tip

नीतिशतक और अन्य सुभाषित संग्रहों के प्रसिद्ध श्लोकों को याद करने का प्रयास करें। ये अक्सर परीक्षाओं में पूछे जाते हैं।

7. "समदुःखसुखो भूत्वा स परत्र महीयते" सूक्ति किस पाठ से उद्धृत है ?

- (A) सुक्ति सुधा
- (B) विद्यार्थिचर्या
- (C) क्षान्ति सौख्यम्
- (D) गीतामृतम्

Correct Answer: (D) गीतामृतम्

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न एक सूक्ति के स्रोत (पाठ) की पहचान करने के लिए है। सूक्ति का अर्थ है "जो सुख और दुःख में समान रहता है, वह परलोक में महिमा पाता है।"

Step 2: Detailed Explanation:

'समदुःखसुखः' (सुख और दुःख में समान) का विचार श्रीमद्भगवद्गीता का केंद्रीय संदेश है। गीता में भगवान कृष्ण अर्जुन को सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय में समान रहने का उपदेश देते हैं।

"सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।" (गीता 2.38)

इसलिए, यह सूक्ति 'गीतामृतम्' (गीता का अमृत) नामक पाठ से ली गई है, जो गीता की शिक्षाओं पर आधारित है।

Quick Tip

किसी सूक्ति या श्लोक के मूल पाठ को पहचानने के लिए उसके केंद्रीय भाव (जैसे - समता, विद्या, क्षमा) पर ध्यान दें और उसे विकल्पों में दिए गए पाठों के विषयों से मिलाएं।

8. एकाकी चिन्तयानो हि परं अधिगच्छति।

- (A) सुखम्
- (B) दुःखम्
- (C) श्रेयः
- (D) प्रेयः

Correct Answer: (C) श्रेयः

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न मनुस्मृति के एक श्लोक की पंक्ति को पूरा करने के लिए है।

Step 2: Detailed Explanation:

मनुस्मृति का पूरा श्लोक (4.258) इस प्रकार है :

एकाकी चिन्तयेन्नित्यं विविक्ते हितमात्मनः ।

एकाकी चिन्तयानो हि परं श्रेयो ऽधिगच्छति ॥

इसका अर्थ है : व्यक्ति को एकांत में सदा अकेले अपने हित का चिंतन करना चाहिए। क्योंकि अकेले चिंतन करने वाला मनुष्य परम श्रेय (कल्याण) को प्राप्त करता है।

अतः, रिक्त स्थान में 'श्रेयः' शब्द आएगा।

Quick Tip

'श्रेयस्' (कल्याणकारी) और 'प्रेयस्' (पिरय लगने वाला) दो महत्वपूर्ण दार्शनिक शब्द हैं। उपनिषदों और अन्य ग्रंथों में श्रेय को प्रेय से उत्तम बताया गया है।

9. 'गीताली' इति काव्यस्य रचयिता कः ?

- (A) डॉ० चन्द्रभानुः
- (B) डॉ० रविभानुः
- (C) डॉ० कविभानुः
- (D) डॉ० सूर्यभानुः

Correct Answer: (A) डॉ० चन्द्रभानुः

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न एक आधुनिक संस्कृत काव्य 'गीताली' के रचयिता के बारे में है।

Step 2: Detailed Explanation:

'गीताली' एक आधुनिक संस्कृत गीतिकाव्य है जिसकी रचना डॉ. चंद्रभानु त्रिपाठी ने की है। यद्यपि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी 'गीतालि' (Gitimalya) नामक रचना की है, लेकिन दिए गए विकल्पों में उनका नाम नहीं है। विकल्पों में डॉ. चंद्रभानु का नाम है, जो 'गीताली' के रचयिता के रूप में जाने जाते हैं।

अतः, दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर (A) डॉ० चन्द्रभानुः है।

Quick Tip

परंपरागत संस्कृत साहित्य के साथ-साथ, पाठ्यक्रम में शामिल आधुनिक संस्कृत लेखकों और उनकी प्रमुख रचनाओं पर भी ध्यान दें।

10. नागानन्दस्य लेखकः कः ?

- (A) भवभूतिः
- (B) कालिदासः
- (C) हर्षवर्धनः
- (D) विष्णुशर्मा

Correct Answer: (C) हर्षवर्धनः

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न प्रसिद्ध संस्कृत नाटक 'नागानन्दम्' के लेखक के बारे में है।

Step 2: Detailed Explanation:

'नागानन्दम्' बोधिसत्त्व जीमूतवाहन की आत्म-बलिदान की कथा पर आधारित एक प्रसिद्ध संस्कृत नाटक है। इसकी रचना 7वीं शताब्दी के राजा हर्षवर्धन ने की थी। 'रत्नावली' और 'प्रियदर्शिका' भी उनके द्वारा रचित अन्य नाटक हैं।

अतः, सही उत्तर (C) हर्षवर्धनः है।

Quick Tip

प्रमुख संस्कृत नाटककारों और उनकी रचनाओं की एक सूची बनाकर याद करें, जैसे - कालिदास (अभिज्ञानशाकुन्तलम्), भवभूति (उत्तररामचरितम्), शूद्रक (मृच्छकटिकम्), हर्षवर्धन (नागानन्दम्)।

11. 'डम्' प्रत्याहार के वर्ण हैं

- (A) ङ्, ण्, न्
- (B) ग्, झ, द,
- (C) ज्, ब्, ग्, झ, द्
- (D) य्, व्, झ, ल्

Correct Answer: (A) ङ्, ण्, न्

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न पाणिनीय व्याकरण के 'प्रत्याहार' से संबंधित है। प्रत्याहार माहेश्वर सूत्रों से वर्णों के समूह को संक्षिप्त रूप में दर्शाने की एक विधि है।

Step 2: Key Formula or Approach:

'डम्' प्रत्याहार बनाने के लिए हमें माहेश्वर सूत्रों को देखना होगा। यह 7वें सूत्र "अ म ङ ण न म्" के 'ङ' से शुरू होता है और उसी सूत्र के अंतिम वर्ण 'म्' (इत्संज्ञक) पर समाप्त होता है। प्रत्याहार में प्रारंभिक वर्ण से लेकर अंतिम इत्संज्ञक वर्ण से ठीक पहले तक के सभी वर्णों को गिना जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

माहेश्वर सूत्र 7: अ म ङ ण न म्

'डम्' प्रत्याहार 'ङ' से शुरू होगा और 'म्' से पहले समाप्त होगा।

अतः, इस प्रत्याहार में वर्ण हैं: ङ, ण, न्। ये सभी वर्ण के पंचम (नासिक्य) वर्ण हैं।

Quick Tip

14 माहेश्वर सूत्रों को क्रम से याद कर लें। यह प्रत्याहार, संधि और व्याकरण के कई अन्य नियमों को समझने के लिए आधार है।

12. 'य्' का उच्चारण स्थान है

- (A) ओष्ठ
- (B) तालु
- (C) दन्त
- (D) कण्ठ

Correct Answer: (B) तालु

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न संस्कृत वर्णमाला के वर्णों के उच्चारण स्थान से संबंधित है।

Step 2: Key Formula or Approach:

संस्कृत व्याकरण में उच्चारण स्थानों के लिए सूत्र दिए गए हैं। 'य्' वर्ण के लिए सूत्र है: "इचुयशानां तालु"

Step 3: Detailed Explanation:

इस सूत्र का अर्थ है कि इ/ई, चु (च वर्ग - च, छ, ज, झ, ञ), य, और श इन वर्णों का उच्चारण स्थान 'तालु' (palate) होता है।

अतः, 'य्' का उच्चारण स्थान तालु है।

Quick Tip

उच्चारण स्थानों के सूत्रों को याद करना बहुत उपयोगी है, जैसे - 'अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः', 'इचुयशानां तालु', 'ऋट्टुरषाणां मूर्धा', 'लृतुलसानां दन्ताः', 'उपूध्मानीयानाम् ओष्ठौ'।

13. 'त्वं पठ' में सन्धि है

- (A) परसवर्ण सन्धि
- (B) अनुस्वार सन्धि
- (C) श्चुत्व सन्धि
- (D) ष्टुत्व सन्धि

Correct Answer: (B) अनुस्वार सन्धि

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न संधि की पहचान से संबंधित है। 'त्वं पठ' में 'त्वं' के अंत में अनुस्वार (◌ं) लगा है।

Step 2: Key Formula or Approach:

अनुस्वार संधि का नियम है : 'मोऽनुस्वारः'। इस सूत्र के अनुसार, यदि किसी पद के अंत में 'म्' हो और उसके बाद कोई व्यंजन (हल) वर्ण आए, तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (◌ं) हो जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

'त्वं पठ' का संधि-विच्छेद है : त्वम् + पठ।

यहाँ, पदान्त 'म्' के बाद व्यंजन 'प' आया है। इसलिए, 'मोऽनुस्वारः' सूत्र से 'म्' का अनुस्वार '◌ं' हो गया, जिससे 'त्वं पठ' रूप बना।

अतः, इसमें अनुस्वार संधि है।

Quick Tip

यदि किसी शब्द के अंत में अनुस्वार (◌ं) हो और उसके बाद कोई व्यंजन हो, तो वहाँ प्रायः अनुस्वार संधि होती है, जिसका विच्छेद करने पर अनुस्वार की जगह 'म्' हो जाता है (जैसे - अहं गच्छामि -> अहम् + गच्छामि)।

14. 'नमस्करोति' का सन्धि-विच्छेद होगा

- (A) नमस् + करोति
- (B) नमः + करोति
- (C) नमो + करोति
- (D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (B) नमः + करोति

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न विसर्ग संधि के विच्छेद से संबंधित है।

Step 2: Key Formula or Approach:

विसर्ग संधि का एक नियम है कि यदि विसर्ग (ः) के बाद 'क', 'ख', 'प', या 'फ' वर्ण आए, तो कुछ स्थितियों में विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है ('विसर्जनीयस्य सः' सूत्र के अधिकार क्षेत्र में)।

Step 3: Detailed Explanation:

'नमस्करोति' शब्द में 'नमस्' और 'करोति' के बीच 'स्' आया है। यह 'स्' विसर्ग (ः) से बना है।
विच्छेद: नमः + करोति
यहाँ, विसर्ग (ः) के बाद 'क' आया है, इसलिए विसर्ग का 'स्' हो गया।
अतः, सही संधि-विच्छेद 'नमः + करोति' है।

Quick Tip

'नमः', 'पुरः', 'तिरः' जैसे शब्दों के बाद 'कृ' धातु का कोई रूप (करोति, कारः) आने पर विसर्ग का 'स्' हो जाता है। जैसे - नमः + कारः = नमस्कारः, पुरः + कारः = पुरस्कारः।

15. 'राज्ञोः' पद किस विभक्ति एवं वचन का रूप है ?

- (A) षष्ठी विभक्ति, एकवचन
- (B) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन
- (C) षष्ठी विभक्ति, द्विवचन
- (D) सप्तमी विभक्ति, एकवचन

Correct Answer: (C) षष्ठी विभक्ति, द्विवचन

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न 'राजन्' (राजा) शब्द के रूप की विभक्ति और वचन की पहचान करने के लिए है।

Step 2: Detailed Explanation:

'राजन्' (नकारान्त पुल्लिंग) शब्द के षष्ठी और सप्तमी विभक्ति के रूप इस प्रकार हैं:

- षष्ठी विभक्ति : राज्ञः (एकवचन), राज्ञोः (द्विवचन), राज्ञाम् (बहुवचन)

- सप्तमी विभक्ति : राज्ञि/राजनि (एकवचन), राज्ञोः (द्विवचन), राजसु (बहुवचन)

'राज्ञोः' रूप षष्ठी विभक्ति द्विवचन और सप्तमी विभक्ति द्विवचन, दोनों में होता है।

दिए गए विकल्पों में 'षष्ठी विभक्ति, द्विवचन' (C) मौजूद है।

अतः, विकल्प (C) सही है।

Quick Tip

अकारान्त और आकारान्त के अलावा कुछ महत्वपूर्ण नकारान्त (राजन्, आत्मन्), सकारान्त (मनस्), और रिकारान्त (पितृ, मातृ) शब्द रूपों को अवश्य याद करें।

16. 'वारि' पद का सप्तमी द्विवचन का रूप है

- (A) वारीणि
- (B) वारिणोः
- (C) वारिणी
- (D) वारिषु

Correct Answer: (B) वारिणोः

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न 'वारि' (जल) शब्द के सप्तमी विभक्ति, द्विवचन के रूप के बारे में है। 'वारि' एक इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द है।

Step 2: Detailed Explanation:

'वारि' शब्द के सप्तमी विभक्ति के रूप इस प्रकार हैं:

- एकवचन : वारिणि

- द्विवचन : वारिणोः

- बहुवचन : वारिषु

प्रश्न में सप्तमी द्विवचन का रूप पूछा गया है, जो 'वारिणोः' है।

अतः, विकल्प (B) सही है। (विकल्प (C) 'वारिणी', प्रथमा/द्वितीया विभक्ति द्विवचन का रूप है।)

Quick Tip

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों (जैसे - वारि, दधि, अस्थि) के रूप 'मुनि' (पुल्लिङ्ग) और 'मति' (स्त्रीलिङ्ग) से थोड़े भिन्न होते हैं। इनके शब्द रूपों को विशेष रूप से याद करें।

17. 'पास्यथ' रूप है

- (A) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
- (B) लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
- (C) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन
- (D) विधिलिङ्ग लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन

Correct Answer: (C) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न 'पा' (पीना) धातु के लकार, पुरुष और वचन की पहचान से संबंधित है। 'पास्यथ' रूप में '-स्य-' का प्रयोग भविष्य काल (लृट् लकार) का सूचक है।

Step 2: Detailed Explanation:

'पा' (पिब) धातु के लृट् लकार (भविष्यत् काल) के रूप इस प्रकार हैं:

- प्रथम पुरुष : पास्यति, पास्यतः, पास्यन्ति
- मध्यम पुरुष : पास्यसि, पास्यथः, पास्यथ
- उत्तम पुरुष : पास्यामि, पास्यावः, पास्यामः

अतः, 'पास्यथ' रूप लृट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का है।

Quick Tip

धातु रूपों में जब '-स्य-' या '-ष्य-' का आगम होता है (जैसे - पठिष्यति, गमिष्यति, पास्यति), तो वह सामान्यतः लृट् लकार (भविष्यत् काल) होता है।

18. 'भवेः' रूप किस लकार का है ?

- (A) लट् लकार
- (B) लोट् लकार

- (C) लृट् लकार
(D) विधिलिङ्ग लकार

Correct Answer: (D) विधिलिङ्ग लकार

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न 'भू' (होना) धातु के लकार की पहचान से संबंधित है। 'भवे:' रूप 'चाहिए' के अर्थ को प्रकट करता है, जो विधिलिङ् लकार का लक्षण है।

Step 2: Detailed Explanation:

'भू' (भव्) धातु के विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में) के रूप इस प्रकार हैं:

- प्रथम पुरुष : भवेत्, भवेताम्, भवेयुः
- मध्यम पुरुष : भवेः, भवेतम्, भवेत
- उत्तम पुरुष : भवेयम्, भवेव, भवेम

अतः, 'भवे:' रूप विधिलिङ्ग लकार का (मध्यम पुरुष, एकवचन) है।

Quick Tip

विधिलिङ् लकार के रूपों की पहचान 'ए' की मात्रा से की जा सकती है, जैसे - पठेत्, गच्छेत्, भवेत्, लिखेत् आदि।

19. 'इतिहरि' में समास है

- (A) बहुव्रीहि
(B) अव्ययीभाव
(C) द्विगु
(D) कर्मधारय

Correct Answer: (B) अव्ययीभाव

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न समास की पहचान से संबंधित है। 'इतिहरि' पद का प्रथम पद 'इति' एक अव्यय है।

Step 2: Key Formula or Approach:

अव्ययीभाव समास का नियम है : 'पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः'। इसमें पूर्वपद (पहला पद) प्रधान

होता है और वह प्रायः एक अव्यय होता है। समस्त पद भी अव्यय बन जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

'इतिहरि' का समास विग्रह होता है : हरि शब्दस्य प्रकाशः (हरि शब्द का प्रकाश या उल्लेख)। यहाँ 'इति' अव्यय का 'शब्दप्रादुर्भाव' (शब्द के प्रकाश) के अर्थ में 'हरि' शब्द के साथ समास हुआ है। चूँकि पूर्वपद 'इति' एक अव्यय है और वही प्रधान है, इसलिए यहाँ अव्ययीभाव समास है।

Quick Tip

जिस सामासिक पद का पहला पद कोई अव्यय या उपसर्ग हो (जैसे - उप, अधि, प्रति, यथा, इति), वहाँ प्रायः अव्ययीभाव समास होता है।

20. 'त्रिफला' का समास विग्रह है

- (A) तिसृषु फलेषु समाहारः
- (B) त्रीणि फलानि समाहारः
- (C) त्रयाणां फलानां समाहारः
- (D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (C) त्रयाणां फलानां समाहारः

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न द्विगु समास के विग्रह से संबंधित है। 'त्रिफला' शब्द का पहला पद 'त्रि' संख्यावाची है।

Step 2: Key Formula or Approach:

द्विगु समास में, जहाँ पहला पद संख्यावाची हो और समस्त पद समाहार (समूह) का बोध कराए, विग्रह करते समय संख्यावाची शब्द और उत्तर पद, दोनों में षष्ठी विभक्ति, बहुवचन का प्रयोग होता है और अंत में 'समाहारः' जोड़ा जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

'त्रिफला' का अर्थ है 'तीन फलों का समूह'।

- 'तीन' के लिए 'त्रि' शब्द का षष्ठी, बहुवचन रूप 'त्रयाणाम्' होगा।
- 'फल' के लिए 'फल' शब्द का षष्ठी, बहुवचन रूप 'फलानाम्' होगा।
- अंत में 'समाहारः' जोड़ा जाएगा।

अतः, सही विग्रह है : त्रयाणां फलानां समाहारः।

(नोट: चूँकि 'फल' नपुंसकलिङ्ग है, 'त्रीणि फलानि' प्रथमा/द्वितीया विभक्ति है। 'तिसृषु' स्त्रीलिंग

सप्तमी विभक्ति है। इसलिए विकल्प (A) और (B) व्याकरण की दृष्टि से गलत हैं।)

Quick Tip

द्विगु समास का विग्रह करते समय, यह ध्यान रखें कि विग्रह के दोनों पदों में षष्ठी विभक्ति, बहुवचन लगाकर अंत में 'समाहारः' जोड़ते हैं। जैसे - पञ्चानां वटानां समाहारः = पञ्चवटी।

1(क). निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

(क) सम्यक् वक्तुं शक्यते यत् नैतिकताचरणस्य, मुख्यमुद्देश्यं स्वस्य अन्यस्य च कल्याणकरणं भवति । कदाचित् दृश्यते यत् परेषां कल्याणं कुर्वन् मनुष्यः स्वीयाम् हानिमपि कुरुते । एवं विधं नैतिकाचरणं विशिष्टं महत्वपूर्णं च मन्यते । परेषां हितं नैतिकतायाः प्राणभूतं तत्त्वम् ॥

उत्तर :

हिन्दी अनुवाद

ठीक ही कहा जा सकता है कि नैतिक आचरण का मुख्य उद्देश्य अपना और दूसरों का कल्याण करना होता है। कभी-कभी यह देखा जाता है कि दूसरों का कल्याण करता हुआ मनुष्य अपनी हानि भी कर लेता है। इस प्रकार का नैतिक आचरण विशेष और महत्वपूर्ण माना जाता है। दूसरों का हित ही नैतिकता का प्राणभूत (आत्मा के समान) तत्व है।

Solution:

Step 1: Understanding the Vocabulary:

- सम्यक् वक्तुं शक्यते यत् - ठीक ही कहा जा सकता है कि
- नैतिकताचरणस्य - नैतिक आचरण का
- मुख्यमुद्देश्यं - मुख्य उद्देश्य
- स्वस्य अन्यस्य च - अपना और दूसरे का
- कल्याणकरणं - कल्याण करना
- कदाचित् दृश्यते यत् - कभी-कभी देखा जाता है कि
- परेषां कल्याणं कुर्वन् - दूसरों का कल्याण करता हुआ
- स्वीयाम् हानिमपि कुरुते - अपनी हानि भी करता है
- एवं विधं - इस प्रकार का
- विशिष्टं महत्वपूर्णं च मन्यते - विशेष और महत्वपूर्ण माना जाता है
- परेषां हितं - दूसरों का हित
- प्राणभूतं तत्त्वम् - प्राणभूत तत्व (आत्मा के समान)

Step 2: Sentence-by-Sentence Translation:

1. सम्यक् वक्तुं शक्यते ... कल्याणकरणं भवति । -> ठीक ही कहा जा सकता है कि नैतिक आचरण का मुख्य उद्देश्य अपना और दूसरों का कल्याण करना होता है।
2. कदाचित् दृश्यते ... हानिमपि कुरुते । -> कभी-कभी यह देखा जाता है कि दूसरों का कल्याण करता हुआ मनुष्य अपनी हानि भी कर लेता है।

3. एवं विधं ... मन्वते । -> इस प्रकार का नैतिक आचरण विशेष और महत्वपूर्ण माना जाता है ।
4. परेषां हितं ... तत्त्वम् ।। -> दूसरों का हित ही नैतिकता का प्राणभूत तत्त्व है ।

Quick Tip

अनुवाद करते समय, पहले कठिन शब्दों के अर्थ को समझें, फिर वाक्य के कर्ता, कर्म और क्रिया को पहचान कर वाक्य की संरचना करें। संस्कृत के वाक्यों को छोटे-छोटे भागों में तोड़कर अनुवाद करना आसान होता है।

1(ख). निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

(ख) रवीन्द्रस्य साहित्यिक रचनायां नैसर्गिकी नव-नेवोन्मेषशालिनी प्रतिभा तु प्रधानकारणम् आसीत् एव । परं तत्रत्या पारिवारिकपरिस्थितिरपि विशिष्टं कारणमभूत् । यथा - गृहे प्रतिदिनं साहित्यिकं वातावरणं कलासाधनायाः गतिविधयः, नाटकानां मञ्चनानि, सङ्गीतगोष्ठयः, चित्रकलानां प्रदर्शनानि, देशसेवाकर्माणि सदैव भवन्ति स्म ।

उत्तर :

हिन्दी अनुवाद

रवीन्द्र की साहित्यिक रचना में स्वाभाविक और नित्य नवीन कल्पना करने वाली प्रतिभा तो मुख्य कारण थी ही, परंतु वहाँ की पारिवारिक परिस्थिति भी विशेष कारण थी। जैसे - घर में प्रतिदिन साहित्यिक वातावरण, कला की साधना की गतिविधियाँ, नाटकों का मंचन, संगीत की सभाएँ, चित्रकला की प्रदर्शनियाँ और देश-सेवा के कार्य हमेशा होते रहते थे।

Solution:

Step 1: Understanding the Vocabulary:

- साहित्यिक रचनायां - साहित्यिक रचना में
- नैसर्गिकी - स्वाभाविक (natural)
- नव-नेवोन्मेषशालिनी प्रतिभा - नित्य नवीन कल्पना करने वाली प्रतिभा
- प्रधानकारणम् आसीत् एव - मुख्य कारण थी ही
- परं - परंतु
- तत्रत्या पारिवारिकपरिस्थितिः - वहाँ की पारिवारिक परिस्थिति
- विशिष्टं कारणमभूत् - विशेष कारण थी
- यथा - जैसे
- गृहे प्रतिदिनं - घर में प्रतिदिन
- साहित्यिकं वातावरणं - साहित्यिक वातावरण
- कलासाधनायाः गतिविधयः - कला साधना की गतिविधियाँ
- नाटकानां मञ्चनानि - नाटकों का मंचन
- सङ्गीतगोष्ठयः - संगीत की सभाएँ
- चित्रकलानां प्रदर्शनानि - चित्रकला की प्रदर्शनियाँ
- देशसेवाकर्माणि - देश-सेवा के कार्य
- सदैव भवन्ति स्म - हमेशा होते रहते थे

Step 2: Sentence-by-Sentence Translation:

1. रवीन्द्रस्य ... आसीत् एव । -> रवीन्द्र की साहित्यिक रचना में स्वाभाविक और नित्य नवीन कल्पना करने वाली प्रतिभा तो मुख्य कारण थी ही ।
2. परं ... कारणमभूत् । -> परंतु वहाँ की पारिवारिक परिस्थिति भी विशेष कारण थी ।
3. यथा - गृहे ... भवन्ति स्म । -> जैसे - घर में प्रतिदिन साहित्यिक वातावरण, कला की साधना की गतिविधियाँ, नाटकों का मंचन, संगीत की सभाएँ, चित्रकला की प्रदर्शनियाँ और देश-सेवा के कार्य हमेशा होते रहते थे ।

Quick Tip

'स्म' अव्यय का प्रयोग जब लट् लकार की क्रिया के साथ होता है, तो वह भूतकाल (लङ् लकार) का अर्थ देता है। जैसे 'भवन्ति' (होते हैं) + 'स्म' = 'भवन्ति स्म' (होते थे)।

2(क). निम्नलिखित पाठों में से किसी एक पाठ का सारांश हिन्दी में लिखिए :

(क) आदिशंकराचार्यः

उत्तर :

आदिशंकराचार्यः (पाठ का सारांश)

आदिशंकराचार्य का जन्म केरल प्रदेश के कालडी नामक गाँव में 788 ई. में हुआ था। उनके पिता का नाम शिवगुरु और माता का नाम सुभद्रा था। बचपन में ही उनके पिता का देहांत हो गया, अतः उनका पालन-पोषण उनकी माता ने ही किया। शंकराचार्य असाधारण प्रतिभा के धनी थे और उन्होंने अल्पायु में ही वेद-वेदांगों का अध्ययन कर लिया था।

सांसारिक जीवन से विरक्त होकर उन्होंने संन्यास लेने की इच्छा प्रकट की। एक कथा के अनुसार, नदी में स्नान करते समय एक मगरमच्छ ने उनका पैर पकड़ लिया, तब उन्होंने अपनी माता से संन्यास की आज्ञा माँगी और माता के आज्ञा देते ही मगरमच्छ ने उन्हें छोड़ दिया। संन्यास के पश्चात् वे गोविन्दपाद के शिष्य बने और उनसे ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया।

तत्कालीन भारतीय समाज विविध मत-मतान्तरों, अंधविश्वासों और कुरीतियों में बंटा हुआ था। शंकराचार्य ने इस स्थिति को सुधारने के लिए पूरे भारत का भ्रमण किया और शास्त्रार्थ के माध्यम से अद्वैत वेदान्त के सिद्धांत को स्थापित किया। उनका दर्शन 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' पर आधारित है, अर्थात् एकमात्र ब्रह्म ही सत्य है और यह संसार माया है। उन्होंने वैदिक धर्म के पुनरुत्थान के लिए भारत की चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की - शृंगेरी (दक्षिण), गोवर्धन (पूर्व), शारदा (पश्चिम) और ज्योतिर्मठ (उत्तर)। मात्र बत्तीस वर्ष की अल्पायु में वे ब्रह्मलीन हो गए, किंतु अपने छोटे से जीवन में उन्होंने भारतीय दर्शन और धर्म को एक नई दिशा प्रदान की।

Solution:

Step 1: Understanding the Key Points:

सारांश लिखने के लिए, पाठ के मुख्य बिंदुओं को पहचानना आवश्यक है :

1. जन्म और प्रारंभिक जीवन : जन्म स्थान (कालडी, केरल), माता-पिता का नाम, पिता का शीघ्र देहांत।
2. संन्यास ग्रहण : सांसारिक विरक्ति, मगरमच्छ वाली घटना, गुरु गोविन्दपाद से दीक्षा।

3. दार्शनिक योगदान : तत्कालीन समाज की स्थिति, अद्वैत वेदान्त का प्रचार, 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' का सिद्धांत।
4. संगठनात्मक कार्य: चार मठों की स्थापना।
5. महाप्रयाण : 32 वर्ष की आयु में निधन।

Step 2: Structuring the Summary:

इन बिंदुओं को एक तार्किक क्रम में व्यवस्थित करें। सारांश की शुरुआत जन्म और परिचय से करें, फिर उनके जीवन की मुख्य घटनाओं और कार्यों का वर्णन करें और अंत में उनके महाप्रयाण का उल्लेख करते हुए उनके महत्व को रेखांकित करें। भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

Quick Tip

किसी पाठ का सारांश लिखते समय, मूल पाठ के सभी महत्वपूर्ण तथ्यों (जैसे - नाम, स्थान, तिथि, मुख्य सिद्धांत) को शामिल करने का प्रयास करें, लेकिन अनावश्यक विस्तार से बचें। सारांश मूल पाठ का एक-तिहाई होना चाहिए।

- 2(ख). निम्नलिखित पाठों में से किसी एक पाठ का सारांश हिन्दी में लिखिए :
(ख) लोकमान्य तिलक:

उत्तर :

लोकमान्य तिलक: (पाठ का सारांश)

"स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा" - इस सिंहगर्जना के उद्घोषक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जन्म 1856 ई. में महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले में हुआ था। उनके पिता गंगाधर एक कुशल शिक्षक और संस्कृत के विद्वान थे। तिलक ने बचपन से ही निर्भीकता, राष्ट्रसेवा और न्याय के गुण प्रदर्शित किए।

शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने सरकारी नौकरी करने के बजाय देश सेवा का व्रत लिया। उन्होंने लोगों में राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए 'केसरी' और 'मराठा' नामक दो समाचार पत्रों का प्रकाशन आरम्भ किया। इन पत्रों के माध्यम से वे ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों की कठोर आलोचना करते थे। उन्होंने समाज को संगठित करने और राष्ट्रीयता की भावना भरने के उद्देश्य से 'गणेशोत्सव' और 'शिवाजी महोत्सव' का आयोजन प्रारंभ किया।

उनकी बढ़ती लोकप्रियता और क्रांतिकारी विचारों से भयभीत होकर ब्रिटिश सरकार ने उन पर राज-द्रोह का झूठा मुकदमा चलाया और उन्हें छह वर्ष के कठोर कारावास की सजा देकर बर्मा की मांडले जेल भेज दिया। जेल में उन्होंने 'गीता-रहस्य' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की, जो श्रीमद्भगवद्गीता के कर्मयोग का भाष्य है। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महान सेनानी थे और उन्हें 'लोकमान्य' (लोगों द्वारा सम्मानित) की उपाधि से विभूषित किया गया। 1920 में उनका देहावसान हो गया, किंतु वे आज भी राष्ट्रभक्तों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

Solution:

Step 1: Understanding the Key Points:

सारांश के लिए मुख्य बिंदु :

1. परिचय और प्रसिद्ध नारा : जन्म (1856, रत्नागिरि), पिता का नाम, प्रसिद्ध नारा ।
2. राष्ट्रीय चेतना के कार्य: सरकारी नौकरी का त्याग, 'केसरी' और 'मराठा' समाचार पत्रों का प्रकाशन, गणेशोत्सव और शिवाजी महोत्सव का आरम्भ ।
3. कारावास और रचना : ब्रिटिश सरकार द्वारा राजद्रोह का मुकदमा, मांडले जेल में कारावास, 'गीता-रहस्य' की रचना ।
4. उपाधि और महत्व : 'लोकमान्य' की उपाधि, स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, निधन (1920) ।

Step 2: Structuring the Summary:

परिचय और उनके प्रसिद्ध नारे के साथ सारांश की शुरुआत करें। फिर उनके द्वारा किए गए सामाजिक और राजनीतिक कार्यों का क्रमबद्ध वर्णन करें। उनके जीवन के संघर्ष, जेल यात्रा और उनकी महान रचना का उल्लेख करें। अंत में, उनकी उपाधि और भारतीय इतिहास में उनके स्थान को बताते हुए सारांश को समाप्त करें।

Quick Tip

महापुरुषों की जीवनी का सारांश लिखते समय, उनके द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों, उनकी विचारधारा या दर्शन और समाज पर उनके प्रभाव का उल्लेख अवश्य करें।

2(ग). निम्नलिखित पाठों में से किसी एक पाठ का सारांश हिन्दी में लिखिए :

(ग) दीनबन्धु: ज्योतिबाफुले ।

उत्तर :

दीनबन्धु: ज्योतिबाफुले (पाठ का सारांश)

दीनबन्धु ज्योतिबा फुले का जन्म 1827 ई. में महाराष्ट्र के पुणे नगर में हुआ था। वे एक महान भारतीय विचारक, समाज सुधारक और लेखक थे। उन्होंने उन्नीसवीं सदी में भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, स्त्रियों की दयनीय स्थिति और किसानों के शोषण के विरुद्ध एक सशक्त आवाज उठाई।

ज्योतिबा फुले ने अनुभव किया कि समाज की उन्नति के लिए स्त्रियों और दलितों की शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। इसलिए, उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले के साथ मिलकर 1848 ई. में पुणे में भारत की पहली बालिका विद्यालय की स्थापना की। उन्होंने विधवा-विवाह का समर्थन किया और बाल-विवाह का घोर विरोध किया। विधवाओं के बच्चों के लिए उन्होंने एक अनाथालय भी खोला।

दलितों और पिछड़ी जातियों के उत्थान के लिए उन्होंने 1873 ई. में 'सत्यशोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। इस संगठन का उद्देश्य समाज के कमजोर वर्गों को सामाजिक न्याय दिलाना और उन्हें ब्राह्मणवादी रूढ़ियों से मुक्त कराना था। उन्होंने 'गुलामगिरी' और 'शेतकऱ्याचा आसूड' (किसान का कोड़ा) जैसी कई क्रांतिकारी पुस्तकों की रचना की, जिनमें उन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया। उनके निःस्वार्थ समाज सेवा के कारण ही उन्हें 'महात्मा' की उपाधि से सम्मानित किया गया। वे सही अर्थों में दलितों, शोषितों और स्त्रियों के बंधु थे, इसीलिए उन्हें 'दीनबन्धु' भी कहा जाता है।

Solution:

Step 1: Understanding the Key Points:

सारांश के लिए मुख्य बिंदु :

1. परिचय : जन्म (1827, पुणे), समाज सुधारक के रूप में परिचय ।
2. शिक्षा के क्षेत्र में योगदान : स्त्री और दलित शिक्षा पर जोर, पत्नी सावित्रीबाई के साथ पहले बालिका विद्यालय की स्थापना (1848) ।
3. सामाजिक सुधार : विधवा-विवाह का समर्थन, बाल-विवाह का विरोध, अनाथालय की स्थापना ।
4. संगठनात्मक कार्य और लेखन : 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना (1873), 'गुलामगिरी' जैसी पुस्तकों की रचना ।
5. उपाधियाँ : 'महात्मा' और 'दीनबन्धु' उपाधियों का कारण ।

Step 2: Structuring the Summary:

ज्योतिबा फुले के परिचय से सारांश आरंभ करें। उनके मुख्य सुधार कार्यों को दो भागों में बाँटें - स्त्री शिक्षा और सामाजिक कुरीतियाँ। फिर उनके द्वारा स्थापित संगठन 'सत्यशोधक समाज' और उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करें। अंत में, उन्हें मिली उपाधियों का जिक्र करते हुए उनके सामाजिक योगदान को रेखांकित करें।

Quick Tip

समाज सुधारकों पर सारांश लिखते समय, उनके द्वारा लड़ी गई मुख्य सामाजिक बुराइयों और उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं या किए गए विशिष्ट कार्यों का उल्लेख करना महत्वपूर्ण होता है।

3(क). निम्नलिखित श्लोकों में से किसी एक श्लोक की हिन्दी में व्याख्या कीजिए :

(क) पञ्चभिर्यदि भूतैस्तु युक्ताः स्थावरजङ्गमाः ।

स्थावराणां न दृश्यन्ते शरीरे पञ्चधातवः ॥

उत्तर :

संदर्भ : प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'वृक्षाणां चेतनत्वम्' (वृक्षों की चेतना) नामक पाठ से उद्धृत है। यह महाभारत के शांतिपर्व से लिया गया है।

प्रसंग : इस श्लोक में महर्षि भरद्वाज, महर्षि भृगु से प्रश्न करते हैं कि यदि चर (मनुष्य, पशु आदि) और अचर (वृक्ष आदि) दोनों ही पंचभूतों से बने हैं, तो वृक्षों के शरीर में पाँच धातुएँ क्यों नहीं दिखाई देतीं।

व्याख्या : महर्षि भरद्वाज तर्क प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि "यदि स्थावर (स्थिर रहने वाले अर्थात् वृक्ष) और जंगम (चलने-फिरने वाले अर्थात् जीव-जंतु) दोनों ही पाँच महाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) से युक्त हैं, तो फिर वृक्षों के शरीर में (जीव-जंतुओं की तरह) पाँच धातुएँ (त्वचा, मांस, हड्डी, मज्जा, स्नायु) क्यों नहीं दिखाई देती हैं?" यह प्रश्न वास्तव में वृक्षों में चेतना या जीवन के अस्तित्व पर एक संदेह है, जिसका निवारण भृगु आगे के श्लोकों में करते हैं।

Solution:

Step 1: Understanding the Context (संदर्भ और प्रसंग):

यह श्लोक एक संवाद का हिस्सा है। व्याख्या लिखने से पहले यह स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है कि यह कौन किससे कह रहा है और क्यों कह रहा है। यह श्लोक वृक्षों में जीवन है या नहीं, इस विषय पर एक प्रश्न है।

Step 2: Word-by-Word Meaning (शब्दार्थ):

- पञ्चभिः भूतैः तु - पाँच भूतों से तो
- युक्ताः - युक्त हैं
- स्थावरजङ्गमाः - स्थावर (वृक्ष) और जंगम (जीव)
- स्थावराणाम् - स्थावरों (वृक्षों) के
- न दृश्यन्ते - नहीं दिखाई देते हैं
- शरीरे - शरीर में
- पञ्चधातवः - पाँच धातुएँ (त्वचा, मांस, अस्थि, मज्जा, स्नायु)

Step 3: Explanation (व्याख्या):

सभी शब्दों के अर्थ को मिलाकर एक सुसंगत व्याख्या बनाएँ। भरद्वाज का तर्क यह है कि चूँकि दोनों प्रकार के प्राणी (चर और अचर) पंचभूतों से बने हैं, तो उनमें समानता होनी चाहिए। लेकिन वृक्षों में मनुष्यों की तरह त्वचा, मांस, हड्डी आदि नहीं दिखते। यह असमानता क्यों है? यह प्रश्न वृक्षों के जीवत्व पर संदेह उत्पन्न करता है, जिसे भृगु बाद में तर्कों द्वारा सिद्ध करते हैं कि वृक्षों में भी जीवन होता है, भले ही वह अलग रूप में हो।

Quick Tip

किसी भी श्लोक की व्याख्या करते समय, उसे तीन भागों में विभाजित करें: संदर्भ (पाठ का नाम), प्रसंग (श्लोक का विषय), और व्याख्या (श्लोक का विस्तृत अर्थ)। यह एक आदर्श प्रारूप है।

3(ख). निम्नलिखित श्लोकों में से किसी एक श्लोक की हिन्दी में व्याख्या कीजिए :

(ख) लक्ष्मीर्न या याचक दुःखहारिणी विद्या न याप्यच्युत भक्तिकारिणी ।

पुत्रो न यः पण्डितमण्डलाग्रणीः सा नैव सा नैव स नैव नैव ॥

उत्तर :

संदर्भ: प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'सूक्ति-सुधा' नामक पाठ से उद्धृत है।

प्रसंग : इस श्लोक में कवि ने धन, विद्या और पुत्र की सार्थकता पर प्रकाश डाला है और बताया है कि कौन-से धन, विद्या और पुत्र व्यर्थ हैं।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि -

1. वह लक्ष्मी (धन) लक्ष्मी नहीं है, जो याचकों (जरूरतमंदों) के दुःख को दूर न करे। अर्थात्, धन की सार्थकता दान करने और दूसरों की मदद करने में है।
2. वह विद्या विद्या नहीं है, जो अच्युत (भगवान विष्णु) के प्रति भक्ति उत्पन्न न करे। अर्थात्, विद्या का परम लक्ष्य ईश्वर के प्रति समर्पण और भक्ति प्राप्त करना है।
3. वह पुत्र पुत्र नहीं है, जो विद्वानों की मंडली में अग्रणी (श्रेष्ठ) न हो। अर्थात्, पुत्र की सार्थकता

विद्वान और यशस्वी होने में है।

कवि अंत में जोर देकर कहते हैं कि यदि इनमें ये गुण नहीं हैं, तो "वह (लक्ष्मी) नहीं है, वह (विद्या) नहीं है, वह (पुत्र) भी नहीं है।"

Solution:

Step 1: Understanding the Context (संदर्भ और प्रसंग):

यह एक नीतिश्लोक है जो जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं - धन, विद्या और पुत्र - की वास्तविक उपयोगिता और सार्थकता को परिभाषित करता है।

Step 2: Word-by-Word Meaning (शब्दार्थ):

- लक्ष्मी: न या - वह लक्ष्मी नहीं जो
- याचक दुःखहारिणी - याचकों के दुःख को हरने वाली
- विद्या न या - वह विद्या नहीं जो
- अच्युत भक्तिकारिणी - भगवान विष्णु की भक्ति कराने वाली
- पुत्र: न यः - वह पुत्र नहीं जो
- पण्डितमण्डलाग्रणी: - विद्वानों की मंडली में अग्रणी
- सा नैव, सा नैव, स नैव नैव - वह (स्त्रीलिंग) नहीं है, वह (स्त्रीलिंग) नहीं है, वह (पुल्लिंग) भी नहीं है।

Step 3: Explanation (व्याख्या):

श्लोक के प्रत्येक चरण की अलग-अलग व्याख्या करें। पहले, धन के उद्देश्य को स्पष्ट करें (दान)। दूसरे, विद्या के उद्देश्य को स्पष्ट करें (भक्ति)। तीसरे, पुत्र के आदर्श को स्पष्ट करें (विद्वता)। अंत में, कवि द्वारा 'नैव नैव' की पुनरावृत्ति का उल्लेख करें, जो इस बात पर बल देता है कि इन गुणों के बिना धन, विद्या और पुत्र का होना न होने के बराबर है।

Quick Tip

नीतिश्लोकों की व्याख्या करते समय, श्लोक में दिए गए आदर्शों को आज के जीवन के संदर्भ में भी संक्षेप में बता सकते हैं। इससे व्याख्या अधिक प्रभावशाली बनती है।

4(क). निम्नलिखित सूक्तियों में से किसी एक सूक्ति की हिन्दी में व्याख्या कीजिए :

(क) भैषज्यमेतद् दुःखस्य यदेतन्नानुचिन्तयेत् ।

उत्तर :

संदर्भ: यह सूक्ति संभवतः 'रघुवंशम्' महाकाव्य से आधारित पाठ 'रन्तिदेवः' से उद्धृत है।

व्याख्या : इस सूक्ति का अर्थ है - "दुःख की यही औषधि (भैषज्यम्) है कि उसका बार-बार चिंतन न किया जाए।" इसमें यह उपदेश दिया गया है कि मानसिक दुःख या किसी अप्रिय घटना से उबरने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम उस घटना को अपने मन में बार-बार न दोहराएँ। जिस प्रकार शारीरिक रोग के लिए औषधि होती है, उसी प्रकार मानसिक दुःख रूपी रोग की औषधि है - उसे भूलने का प्रयास करना और उसके बारे में सोचना बंद कर देना। बार-बार दुःख का चिंतन करने से दुःख कम नहीं होता,

बल्कि और भी गहरा हो जाता है। अतः, मन की शांति के लिए अप्रिय बातों का चिंतन नहीं करना चाहिए।

Solution:

Step 1: Understanding the Core Idea:

यह सूक्ति दुःख के प्रबंधन (grief management) पर एक मनोवैज्ञानिक सत्य को उजागर करती है। इसका केंद्रीय विचार है कि 'चिंता' दुःख को बढ़ाती है, जबकि 'अ-चिंता' उसे कम करती है।

Step 2: Word-by-Word Meaning (शब्दार्थ):

- भैषज्यम् एतत् - यह औषधि है
- दुःखस्य - दुःख की
- यत् एतत् न अनुचिन्तयेत् - कि इसका बार-बार चिंतन न किया जाए।

Step 3: Explanation (व्याख्या):

व्याख्या में स्पष्ट करें कि यह सूक्ति शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध को दर्शाती है। बताएं कि कैसे नकारात्मक विचारों का बार-बार चिंतन (rumination) मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और इससे बचने का उपाय ही दुःख की सबसे बड़ी दवा है। इसे एक व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक सलाह के रूप में प्रस्तुत करें।

Quick Tip

सूक्तियों की व्याख्या करते समय, उसके शाब्दिक अर्थ के साथ-साथ उसके व्यावहारिक और दार्शनिक महत्व को भी उजागर करें। इससे आपका उत्तर अधिक परिपक्व लगेगा।

4(ख). निम्नलिखित सूक्तियों में से किसी एक सूक्ति की हिन्दी में व्याख्या कीजिए :

(ख) सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्यमप्रियम् ।

उत्तर :

संदर्भ: यह एक प्रसिद्ध सूक्ति है जो मनुस्मृति (4.138) से ली गई है और 'सूक्ति-सुधा' जैसे पाठों में संकलित है।

व्याख्या : इस सूक्ति में वाणी के संयम और उचित प्रयोग का उपदेश दिया गया है। इसका अर्थ है - "सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए, लेकिन अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए।" यहाँ तीन बातें कही गई हैं:

1. सत्यं ब्रूयात् : हमें हमेशा सच बोलना चाहिए।
2. प्रियं ब्रूयात् : हमारी वाणी मीठी और प्रिय होनी चाहिए, जिससे किसी को कष्ट न हो।
3. न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् : हमें ऐसा सच भी नहीं बोलना चाहिए जो अप्रिय हो, अर्थात् जिससे किसी को अनावश्यक दुःख या आघात पहुँचे।

इस सूक्ति का पूर्ण रूप है : "सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम् । प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः ॥" जिसका अर्थ है कि प्रिय लगने वाला असत्य भी नहीं बोलना चाहिए । यही सनातन धर्म है । यह सूक्ति हमें सिखाती है कि हमारी वाणी सत्य, प्रिय और हितकारी होनी चाहिए ।

Solution:

Step 1: Understanding the Core Idea:

यह सूक्ति बोलने की कला और सामाजिक व्यवहार के एक महत्वपूर्ण नियम को बताती है । इसका केंद्रीय विचार यह है कि सत्य बोलना आवश्यक है, लेकिन सत्य को प्रस्तुत करने का तरीका भी प्रिय और सौम्य होना चाहिए ।

Step 2: Breaking Down the Maxim (सूक्ति का विश्लेषण):

- सत्यं ब्रूयात् - सत्य बोलो ।
- प्रियं ब्रूयात् - प्रिय बोलो ।
- न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियम् - अप्रिय सत्य मत बोलो ।

Step 3: Explanation (व्याख्या):

व्याख्या में इन तीनों बिंदुओं को स्पष्ट करें । यह बताएं कि यह सूक्ति केवल सत्य बोलने पर ही नहीं, बल्कि 'कैसे' बोला जाए, इस पर भी जोर देती है । यह सामाजिक सौहार्द बनाए रखने के लिए एक महत्वपूर्ण सूत्र है । आप उदाहरण दे सकते हैं कि कैसे एक ही सत्य को कठोरता से और प्रेम से कहने पर उसका प्रभाव अलग-अलग होता है । व्याख्या को पूर्ण करने के लिए श्लोक की अगली पंक्ति "प्रियं च नानृतं ब्रूयात्" का उल्लेख करना उत्तर को और भी बेहतर बनाता है ।

Quick Tip

यदि कोई सूक्ति किसी प्रसिद्ध श्लोक का आधा भाग हो, तो यदि संभव हो तो पूरे श्लोक का संदर्भ देकर व्याख्या करें । इससे आपके ज्ञान की गहराई प्रदर्शित होती है ।

4(ग). निम्नलिखित सूक्तियों में से किसी एक सूक्ति की हिन्दी में व्याख्या कीजिए :

(ग) अज्ञश्चाश्रद्धानश्च संशयात्मा विनश्यति ।

उत्तर :

संदर्भ: यह सूक्ति श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 4, श्लोक 40) से ली गई है और 'गीतामृतम्' नामक पाठ से उद्धृत है ।

व्याख्या : इस सूक्ति में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि तीन प्रकार के व्यक्ति नष्ट हो जाते हैं अर्थात् परमार्थ के मार्ग से भटक जाते हैं और शांति प्राप्त नहीं कर पाते । वे तीन व्यक्ति हैं:

1. अज्ञः : अज्ञानी व्यक्ति, जिसे आत्म-तत्त्व का ज्ञान नहीं है ।
2. अश्रद्धानः : श्रद्धाहीन व्यक्ति, जिसे गुरु और शास्त्रों के वचनों में विश्वास नहीं है ।
3. संशयात्मा : संशय करने वाला व्यक्ति, जिसके मन में हर बात पर संदेह बना रहता है और वह किसी

भी बात पर निश्चय नहीं कर पाता।

भगवान कहते हैं कि इन तीनों में से भी संशय करने वाले व्यक्ति का पतन सबसे निश्चित है, क्योंकि संशय करने वाले व्यक्ति के लिए न यह लोक है, न परलोक है और न ही सुख है ("नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः")। अतः, आत्म-कल्याण के लिए ज्ञान, श्रद्धा और निःसंशय होना आवश्यक है।

Solution:

Step 1: Understanding the Core Idea:

यह सूक्ति आध्यात्मिक प्रगति में बाधक तीन प्रमुख अवगुणों - अज्ञान, अश्रद्धा और संशय - का वर्णन करती है। इसका केंद्रीय भाव यह है कि संदेह (संशय) सबसे बड़ा विनाशक है।

Step 2: Breaking Down the Maxim (सूक्ति का विश्लेषण):

- अज्ञः च - और अज्ञानी
- अश्रद्धधानः च - और श्रद्धाहीन
- संशयात्मा - संशययुक्त आत्मा वाला व्यक्ति
- विनश्यति - नष्ट हो जाता है।

Step 3: Explanation (व्याख्या):

व्याख्या में इन तीनों शब्दों (अज्ञ, अश्रद्धधान, संशयात्मा) का अर्थ स्पष्ट करें। यह बताएं कि ये तीनों अवगुण कैसे व्यक्ति को आध्यात्मिक और सांसारिक उन्नति से रोकते हैं। विशेष रूप से 'संशयात्मा' पर जोर दें, क्योंकि गीता के अनुसार यह सबसे बुरी स्थिति है। आप व्याख्या को गीता के अगले वाक्यांश "नायं लोकोऽस्ति..." से जोड़कर समाप्त कर सकते हैं, जो इस सूक्ति के अर्थ को और भी गहरा करता है।

Quick Tip

गीता से उद्धृत सूक्तियों की व्याख्या करते समय, भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के संवाद का संदर्भ देना व्याख्या को अधिक प्रासंगिक बना देता है।

5(क). निम्नलिखित में से किसी एक श्लोक का अर्थ संस्कृत में लिखिए :

(क) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।

मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

उत्तरम् (संस्कृते):

अस्य श्लोकस्य सरलार्थः अस्ति यत् - अस्मिन् संसारे (पृथिव्याम्) वस्तुतः त्रीणि एव श्रेष्ठानि वस्तूनि (रत्नानि) सन्ति - जलम्, अन्नम्, मधुरा वाणी (सुभाषितम्) च । परन्तु, मूढैः जनैः (मूर्खैः) पाषाणखण्डेषु (मणि-माणिक्येषु) रत्नस्य संज्ञा दीयते ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

अयं श्लोकः एकं प्रसिद्धं सुभाषितम् अस्ति । अस्मिन् वास्तविकरत्नानां महत्त्वं प्रतिपादितम् । कविः कथयति यत् जीवनस्य मूलाधारभूतानि जलम् अन्नं च तथा च जीवनं सुन्दरं कर्तुं सुभाषितम् एव यथार्थानि रत्नानि सन्ति ।

Step 2: Detailed Explanation (संस्कृते):

सन्दर्भः अयं श्लोकः 'सूक्ति-सुधा' इति पाठात् गृहीतः भवितुम् अर्हति ।

संस्कृत-अर्थः :

अस्मिन् श्लोके कविः कथयति यत् -

1. पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् : अस्यां भूमौ (पृथिव्याम्) केवलं त्रीणि एव वस्तूनि रत्नपदवाच्यानि सन्ति । तानि च सन्ति - जीवनदायकं जलम्, शक्तिदायकम् अन्नम्, तथा च सन्तोष-दायकं सुभाषितम् (शोभनं वचनम्) ।

2. मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते : किन्तु, मूढैः (अविवेकभिः जनैः) पाषाणस्य शकलेषु (शिलाखण्डेषु यथा हीरक-मरकतादिषु) रत्नम् इति नाम दीयते । तेषां दृष्ट्या भौतिकवस्तूनि एव बहुमूल्यानि सन्ति, परन्तु वास्तविकमूल्यं तु जल-अन्न-सुभाषितेषु एव निहितम् अस्ति ।

Quick Tip

संस्कृत में अर्थ लिखते समय, सरल और स्पष्ट शब्दों का प्रयोग करें। श्लोक के प्रत्येक पद (चौथाई) का अलग-अलग अर्थ स्पष्ट करने से उत्तर संरचित और समझने में आसान हो जाता है।

5(ख). निम्नलिखित में से किसी एक श्लोक का अर्थ संस्कृत में लिखिए :

(ख) दमः क्षमा धृतिस्तेजः सन्तोषः सत्यवादिता

ह्रीरहिं सारव्य सनिता दाक्ष्यं चेति सुखावहाः ॥

(Note: The original text seems to have some typos. Assuming it refers to the ten qualities of Dharma.)

उत्तरम् (संस्कृते):

अस्य श्लोकस्य संशोधितरूपस्य (मनुस्मृतेः) अर्थः अस्ति यत् - धृतिः (धैर्यम्), क्षमा, दमः (मनोनिग्रहः), अस्तेयम् (चौर्यम् न करणम्), शौचम् (पवित्रता), इन्द्रियनिग्रहः, धीः (बुद्धिः), विद्या, सत्यम्, अक्रोधः च - एतानि दश धर्मस्य लक्षणानि सन्ति ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept and Correcting the Text:

प्रदत्तः श्लोकः अशुद्धः प्रतीयते । सः सम्भवतः मनुस्मृतौ वर्णितस्य धर्मस्य दश लक्षणानि वर्णयितुं प्रयतते । शुद्धः श्लोकः एवं स्यात् :

"धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥" (मनुस्मृति 6.92)

अस्य अर्थः एव अत्र अपेक्षितः ।

Step 2: Detailed Explanation (संस्कृते):

सन्दर्भः अयं श्लोकः मनुस्मृतितः उद्धृतः।

संस्कृत-अर्थः :

अस्मिन् श्लोके मनुः धर्मस्य दश लक्षणानि (स्वरूपाणि) वर्णयति। तानि सन्ति:

1. धृतिः (धैर्यम्), 2. क्षमा, 3. दमः (मनसः नियन्त्रणम्), 4. अस्तेयम् (अचौर्यम्), 5. शौचम् (शारीरिक-मानसिक-शुद्धता), 6. इन्द्रियनिग्रहः (इन्द्रियाणां वशीकरणम्), 7. धीः (सद्बुद्धिः), 8. विद्या (ज्ञानम्), 9. सत्यम्, 10. अक्रोधः (क्रोधस्य त्यागः)।

मनुः कथयति यत् एतानि एव धर्मस्य दश प्रमुखानि लक्षणानि सन्ति। एतेषां पालनं मानवस्य कृते आवश्यकम् अस्ति।

Quick Tip

यदि प्रश्नपत्र में कोई श्लोक स्पष्ट रूप से अशुद्ध या अधूरा लगे, तो उसके सबसे निकटस्थ प्रसिद्ध श्लोक का संदर्भ देकर उसका सही रूप और अर्थ लिखें। यह आपकी गहन जानकारी को दर्शाता है।

6(क)(i). निम्नलिखित में से किसी एक पात्र का चरित्र-चित्रण हिन्दी में कीजिए :

(i) 'कारुणिको जीमूतवाहनः' पाठ के आधार पर 'शंखचूड़' का।

उत्तर :

'कारुणिको जीमूतवाहनः' नामक नाटक में शंखचूड़ एक नागकुमार है। उसका चरित्र कर्तव्यपरायणता, मातृभक्ति और विवेकशीलता का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

Solution:

Step 1: Understanding the Character and Context:

शंखचूड़ 'नागानन्दम्' नाटक (जिस पर 'कारुणिको जीमूतवाहनः' पाठ आधारित है) का एक महत्वपूर्ण पात्र है। वह नागों और गरुड़ के बीच हुए समझौते के अनुसार, गरुड़ का भोजन बनने के लिए स्वयं को प्रस्तुत करता है।

Step 2: Detailed Character Sketch:

शंखचूड़ के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. कर्तव्यपरायण : शंखचूड़ अपने कुल की रक्षा के लिए हुए समझौते का पालन करने को अपना परम कर्तव्य समझता है। यद्यपि मृत्यु का भय स्वाभाविक है, फिर भी वह अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होता और गरुड़ का आहार बनने के लिए वध्यशिला पर जाता है।

2. मातृभक्त : वह अपनी वृद्ध और एकमात्र माता के प्रति अत्यंत स्नेह और भक्ति रखता है। गरुड़ के पास जाने से पहले, वह अपनी माँ से अंतिम बार मिलने और गोकर्ण भगवान की पूजा करने की इच्छा व्यक्त करता है, जो उसकी मातृभक्ति और धार्मिकता को दर्शाता है।

3. विवेकशील : जब जीमूतवाहन उसके प्राण बचाने के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने का प्रस्ताव रखता है, तो शंखचूड़ इसे स्वीकार नहीं करता। वह तर्क देता है कि एक सामान्य नाग के लिए एक

विद्याधर चक्रवर्ती का बलिदान देना अनुचित है। यह उसकी विवेकशीलता और कृतज्ञता का प्रमाण है।

4. स्पष्टवादी : वह जीमूतवाहन से स्पष्ट कहता है कि उसके स्थान पर किसी और का बलिदान देना नागकुल के लिए कलंक की बात होगी।

संक्षेप में, शंखचूड़ एक आदर्श पुत्र और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक का प्रतीक है, जो व्यक्तिगत जीवन से अधिक कुल के सम्मान और कर्तव्य को महत्व देता है।

Quick Tip

चरित्र-चित्रण करते समय, पात्र के सकारात्मक और नकारात्मक (यदि हों) दोनों पहलुओं का उल्लेख करें। पात्र के संवादों या कार्यों का उदाहरण देकर अपनी बात को प्रमाणित करें।

6(क)(ii). निम्नलिखित में से किसी एक पात्र का चरित्र-चित्रण हिन्दी में कीजिए :

(ii) 'धैर्यधना: हि साधवः' पाठ के आधार पर 'वणिज्' का ।

उत्तर :

'धैर्यधना: हि साधवः' पाठ में 'वणिज्' (व्यापारी) का चरित्र अनुभवी और गुणीजनों के प्रति श्रद्धालु, विनम्र और आस्थावान व्यक्तियों के समूह का प्रतिनिधित्व करता है। वे अपनी सफलता के लिए ज्ञान और अनुभव को महत्व देते हैं और संकट के समय धैर्यवान नेता का अनुसरण करते हैं।

Solution:

Step 1: Understanding the Character and Theme:

यह पाठ 'जातकमाला' की एक कथा पर आधारित है, जिसका शीर्षक 'धैर्यधना: हि साधवः' (धैर्य ही साधुजनों का धन है) है। इसमें मुख्य पात्र बोधिसत्त्व हैं, जो 'सुपारग' नामक एक वृद्ध और कुशल नाविक के रूप में हैं। 'वणिज्' (व्यापारी) वे लोग हैं जो सुपारग की ख्याति सुनकर उन्हें अपने साथ समुद्री यात्रा पर ले जाने का आग्रह करते हैं।

Step 2: Detailed Character Sketch:

'धैर्यधना: हि साधवः' पाठ के आधार पर वणिज् (व्यापारियों) की चरित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. **ज्ञान और अनुभव का सम्मान :** व्यापारी सुपारग की वृद्धावस्था के बावजूद उनके ज्ञान और अनुभव का बहुत सम्मान करते हैं। वे मानते हैं कि सुपारग का साथ होना मंगलकारी है और उनकी उपस्थिति मात्र से यात्रा सफल होगी। यह उनकी बुद्धिमत्ता को दर्शाता है कि वे भौतिक शक्ति से अधिक ज्ञान को महत्व देते हैं।

2. **विनम्र और आग्रही :** जब सुपारग अपनी वृद्धावस्था के कारण यात्रा पर जाने में असमर्थता व्यक्त करते हैं, तो व्यापारी विनम्रतापूर्वक उनसे बार-बार आग्रह करते हैं। उनका यह व्यवहार बड़ों के प्रति उनके सम्मान को प्रकट करता है।

3. **आस्थावान :** यात्रा के दौरान जब भयंकर तूफान आता है और वे समुद्र में भटक जाते हैं, तो वे घबरा जाते हैं लेकिन सुपारग पर अपनी आस्था बनाए रखते हैं। वे संकट के समय उपाय के लिए उन्हीं के पास जाते हैं, जो एक कुशल नेतृत्व में उनके विश्वास को दर्शाता है।

4. नेतृत्व का अनुसरण करने वाले : व्यापारी संकट की घड़ी में सुपारग के निर्देशों का पालन करते हैं। वे समझते हैं कि ऐसे समय में केवल एक अनुभवी व्यक्ति ही उन्हें बचा सकता है। यह उनकी व्यावहारिकता और समझदारी का प्रमाण है।

इस प्रकार, 'वणिज' का चरित्र हमें यह सिखाता है कि हमें गुणी और अनुभवी लोगों का सम्मान करना चाहिए और संकट के समय धैर्यवान और ज्ञानी व्यक्ति के नेतृत्व पर विश्वास करना चाहिए।

Quick Tip

जब किसी सामूहिक पात्र (जैसे 'वणिज' या 'शिष्य') का चरित्र-चित्रण करना हो, तो उनकी सामान्य प्रवृत्तियों, विश्वासों और कार्यों का वर्णन करें जो वे एक समूह के रूप में करते हैं।

6(क)(iii). निम्नलिखित में से किसी एक पात्र का चरित्र-चित्रण हिन्दी में कीजिए :

(iii) 'भोजस्य शल्यचिकित्सा' पाठ के आधार पर 'भोज' का ।

उत्तर :

'भोजस्य शल्यचिकित्सा' पाठ में राजा भोज का चरित्र एक धैर्यवान, प्रजावत्सल, बुद्धिमान और विज्ञान में आस्था रखने वाले शासक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे संकट के समय में भी अपना विवेक नहीं खोते और उचित निर्णय लेते हैं।

Solution:

Step 1: Understanding the Character and Context:

यह पाठ 'भोजप्रबन्ध' से लिया गया एक प्रसंग है, जिसमें राजा भोज के सिर में हुए रोग और उसकी सफल शल्यचिकित्सा का वर्णन है। इस प्रसंग में भोज का चरित्र एक आदर्श रोगी और शासक के रूप में उभरता है।

Step 2: Detailed Character Sketch:

राजा भोज के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. **धैर्यवान और सहनशील :** सिर में असहनीय पीड़ा होने के बावजूद राजा भोज धैर्य बनाए रखते हैं। वे अपने कष्ट को शांतिपूर्वक सहन करते हैं और चिकित्सकों के उपचार में सहयोग करते हैं।
2. **प्रजावत्सल :** राजा भोज एक प्रजाप्रेमी शासक हैं। वे अपने रोग के कारण राज्य की व्यवस्था में कोई बाधा नहीं आने देना चाहते। वे चाहते हैं कि उनकी प्रजा सुखी और सुरक्षित रहे।
3. **विज्ञान और चिकित्सा में आस्था :** जब उनके राज्य के सभी वैद्य उपचार में असफल हो जाते हैं, तो वे दो विदेशी चिकित्सकों द्वारा प्रस्तावित 'शल्यचिकित्सा' (सर्जरी) जैसे नवीन और जोखिमपूर्ण उपचार के लिए सहमत हो जाते हैं। यह चिकित्सा विज्ञान में उनकी गहरी आस्था को दर्शाता है।
4. **बुद्धिमान और निर्णायक :** वे चिकित्सकों की योजना को समझते हैं और उस पर विश्वास करते हैं। वे अपनी जान का जोखिम उठाकर भी शल्यचिकित्सा की अनुमति देते हैं, जो उनकी बुद्धिमत्ता और साहसिक निर्णय लेने की क्षमता का परिचायक है।
5. **उदार :** रोगमुक्त होने पर वे उन चिकित्सकों को प्रचुर धन और सम्मान देकर विदा करते हैं, जो उनके उदार हृदय का प्रमाण है।

संक्षेप में, राजा भोज का चरित्र एक ऐसे आदर्श राजा का है जो व्यक्तिगत कष्टों से ऊपर उठकर प्रजा और ज्ञान-विज्ञान को महत्व देता है।

Quick Tip

किसी ऐतिहासिक पात्र का चरित्र-चित्रण करते समय, पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर ही उनके गुणों (जैसे - वीरता, उदारता, बुद्धिमत्ता) का विश्लेषण करें।

6(ख)(i). निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर संस्कृत में लिखिए :
(i) सन्मित्रलक्षणं किम् ?

उत्तरम् :

सन्मित्रं पापात् निवारयति, हिताय योजयते, गुह्यं निगूहति, गुणान् प्रकटीकरोति, आपद्गतं च न जहाति, ददाति काले च। इदमेव सन्मित्रलक्षणम् अस्ति।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

अयं प्रश्नः 'नीतिशतकम्' इत्यस्य प्रसिद्धश्लोकात् आधारितः अस्ति, यत्र उत्तममित्रस्य लक्षणानि वर्णितानि सन्ति।

Step 2: Key Formula or Approach:

सम्बद्धः श्लोकः एवमस्ति:

पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं निगूहति गुणान्प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ॥

Step 3: Detailed Explanation:

अस्य श्लोकस्य आधारेण सन्मित्रस्य लक्षणानि सन्ति - सः मित्रं पापाचरणात् निवारयति (रोकता है), कल्याणकार्ये प्रेरयति (लगाता है), तस्य गोपनीयां वार्ता रक्षति, तस्य सद्गुणान् सर्वेषां समक्षं प्रकटयति, विपत्तिकाले तं न त्यजति, तथा च आवश्यकतायां साहाय्यं करोति। सज्जनाः एतानि एव सन्मित्रस्य लक्षणानि कथयन्ति।

Quick Tip

'किम्' (क्या) इति प्रश्नस्य उत्तरं प्रायः प्रथमा विभक्तौ अथवा एकस्मिन् पूर्णवाक्ये दीयते। प्रसिद्धश्लोकाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि श्लोकं स्मृत्वा दातुं सुकरं भवति।

6(ख)(ii). निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर संस्कृत में लिखिए :
(ii) सातवाहनः कः आसीत् ?

उत्तरम् :

सातवाहनः प्रतिष्ठानपुरस्य राजा आसीत् ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

अयं प्रश्नः संस्कृतकथासाहित्यस्य कस्मात्चित् पाठात् आगतः स्यात्, यत्र सातवाहननामकस्य राज्ञः उल्लेखः अस्ति ।

Step 2: Detailed Explanation:

सातवाहनः (यस्य प्रसिद्धं नाम 'हाल' इति अपि आसीत्) दक्षिणभारते प्रतिष्ठानपुरं (आधुनिकपैठण) राजधानीं कृत्वा शासनं कृतवान् एकः प्रसिद्धः राजा आसीत् । सः स्वयं कविः कवीनां च आश्रयदाता आसीत् । तेन प्राकृतभाषायां 'गाथासप्तशती' नामकः ग्रन्थः रचितः । पाठ्यपुस्तकस्य सन्दर्भे, सः प्रतिष्ठानपुरस्य राजा इति उत्तरं पर्याप्तम् ।

Quick Tip

ऐतिहासिकपात्राणां विषये पृच्छ्यते चेत्, तेषां राज्यस्य अथवा राजधानीयाः नाम उल्लेखितुं श्रेयस्करम् ।

6(ख)(iii). निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर संस्कृत में लिखिए :
(iii) रमानाथस्य पुत्रवधू का आसीत् ?

उत्तरम् :

रमानाथस्य पुत्रवधू विमला आसीत् ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

अयं प्रश्नः कस्याश्चित् आधुनिकसंस्कृतकथायाः पात्राणां विषये अस्ति । प्रश्नः रमानाथनामकस्य पात्रस्य पुत्रवध्वाः नाम पृच्छति ।

Step 2: Detailed Explanation:

'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्' इति पाठानुसारं, रमानाथः एकः स्वतंत्रतासेनानी आसीत् । तस्य

पुत्रः मदनः आसीत् । मदनस्य पत्नी अर्थात् रमानाथस्य पुत्रवधू विमला आसीत् । सा अपि एका देश-भक्ता नारी आसीत् ।

Quick Tip

पात्र-सम्बन्धिप्रश्नेषु, पात्राणां पारस्परिकसम्बन्धं (यथा- पिता-पुत्रः, श्वशुरः-पुत्रवधूः) सम्यक् अवगच्छन्तु ।

7(क)(i). निम्नलिखित रेखाङ्कित पदों में से किसी एक में नियमनिर्देशपूर्वक विभक्ति का नाम लिखिए :

(i) अहं वृक्षे मर्कटं पश्यामि ।

उत्तर :

'वृक्षे' इति पदे सप्तमी विभक्तिः अस्ति ।

नियमः : 'आधारोऽधिकरणम्' इति सूत्रेण क्रियायाः आधारे अधिकरणसंज्ञा भवति । 'सप्तम्यधिकरणे च' इति सूत्रेण अधिकरणकारके सप्तमी विभक्तिः प्रयुज्यते ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

अत्र रेखाङ्कितपदस्य विभक्तिः कारणं च ज्ञातव्यम् । वाक्यस्य अर्थः अस्ति 'मैं वृक्ष पर बंदर को देखता हूँ' । अत्र 'वृक्ष' दर्शनक्रियायाः आधारः (location) अस्ति ।

Step 2: Key Formula or Approach:

सूत्रम् : 'आधारोऽधिकरणम्' - कर्ता और कर्म के द्वारा होने वाली क्रिया का जो आधार होता है, उसकी अधिकरण संज्ञा होती है ।

सूत्रम् : 'सप्तम्यधिकरणे च' - अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है ।

Step 3: Detailed Explanation:

अस्मिन् वाक्ये 'पश्यामि' (देखता हूँ) इति क्रियायाः आधारः 'वृक्ष' अस्ति । 'मर्कट' (बंदर) कर्म वृक्ष पर स्थित है । अतः 'वृक्ष' शब्दस्य अधिकरणसंज्ञा भवति । 'सप्तम्यधिकरणे च' इति सूत्रेण 'वृक्ष' शब्दे सप्तमी विभक्तिः प्रयुक्ता, येन 'वृक्षे' इति रूपं निष्पन्नम् ।

Quick Tip

जब किसी वाक्य में 'में' या 'पर' का भाव हो और वह किसी क्रिया के स्थान (location) को दर्शा रहा हो, तो वहाँ सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक) का प्रयोग होता है ।

7(क)(ii). निम्नलिखित रेखाङ्कित पदों में से किसी एक में नियमनिर्देशपूर्वक विभक्ति का नाम लिखिए :
(ii) आकाशात् पतितं तोयम् ।

उत्तर :

'आकाशात्' इति पदे पञ्चमी विभक्तिः अस्ति ।

नियमः : 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' इति सूत्रेण अपादाने (अलगाव) ध्रुवपदस्य अपादानसंज्ञा भवति । 'अपादाने पञ्चमी' सूत्रेण अपादानकारके पञ्चमी विभक्तिः प्रयुज्यते ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

अत्र रेखाङ्कितपदस्य विभक्तिः कारणं च ज्ञातव्यम् । वाक्यस्य अर्थः अस्ति 'आकाश से गिरा हुआ जल' । अत्र जलस्य आकाशात् पृथक् (अलग) होनस्य भावः अस्ति ।

Step 2: Key Formula or Approach:

सूत्रम् : 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' - किसी वस्तु के अलग होने की क्रिया में जो वस्तु स्थिर रहती है (जिससे अलगाव होता है), उसकी अपादान संज्ञा होती है ।

सूत्रम् : 'अपादाने पञ्चमी' - अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है ।

Step 3: Detailed Explanation:

अस्मिन् वाक्ये 'तोयम्' (जल) 'आकाशात्' पतितम् (गिरा) अस्ति, अर्थात् जल आकाश से अलग हो रहा है । अत्र 'आकाश' ध्रुवम् अस्ति । अतः 'आकाश' शब्दस्य अपादानसंज्ञा भवति । 'अपादाने पञ्चमी' इति सूत्रेण 'आकाश' शब्दे पञ्चमी विभक्तिः प्रयुक्ता, येन 'आकाशात्' इति रूपं निष्पन्नम् ।

Quick Tip

जब भी किसी वाक्य में 'से' का प्रयोग अलगाव (separation), भय (भय), तुलना (comparison), या उत्पत्ति (origin) के अर्थ में हो, तो वहाँ पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है ।

7(क)(iii). निम्नलिखित रेखाङ्कित पदों में से किसी एक में नियमनिर्देशपूर्वक विभक्ति का नाम लिखिए :

(iii) रामः मन्दिरे पूजनं करोति ।

उत्तर :

'मन्दिरे' इति पदे सप्तमी विभक्तिः अस्ति ।

नियमः : 'आधारोऽधिकरणम्' इति सूत्रेण क्रियायाः आधारे अधिकरणसंज्ञा भवति । 'सप्तम्यधिकरणे च' इति सूत्रेण अधिकरणकारके सप्तमी विभक्तिः प्रयुज्यते ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

अत्र रेखाङ्कितपदस्य विभक्तिः कारणं च ज्ञातव्यम् । वाक्यस्य अर्थः अस्ति 'राम मंदिर में पूजा करता है' । अत्र 'मंदिर' पूजनक्रियायाः आधारः (स्थान) अस्ति ।

Step 2: Key Formula or Approach:

सूत्रम् : 'आधारोऽधिकरणम्' - कर्ता और कर्म के द्वारा होने वाली क्रिया का जो आधार होता है, उसकी अधिकरण संज्ञा होती है ।

सूत्रम् : 'सप्तम्यधिकरणे च' - अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है ।

Step 3: Detailed Explanation:

अस्मिन् वाक्ये 'करोति' (करता है) इति क्रियायाः आधारः 'मन्दिर' अस्ति । 'पूजन' कर्म मंदिर में हो रहा है । अतः 'मन्दिर' शब्दस्य अधिकरणसंज्ञा भवति । 'सप्तम्यधिकरणे च' इति सूत्रेण 'मन्दिर' शब्दे सप्तमी विभक्तिः प्रयुक्ता, येन 'मन्दिरे' इति रूपं निष्पन्नम् ।

Quick Tip

क्रिया के होने के स्थान या समय को बताने वाले शब्दों में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है । जैसे - 'ग्रामे वसति' (गाँव में रहता है), 'सायंकाले पठति' (शाम के समय पढ़ता है) ।

7(ख)(i). निम्नलिखित में से किसी एक पद में प्रत्यय लिखिए :

(i) कृत्वा

उत्तर :

'कृत्वा' इति पदे 'क्त्वा' प्रत्ययः अस्ति । (धातुः - कृ)

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

अत्र प्रदत्तपदे मूलधातुः प्रत्ययश्च पृथक् करणीयौ । 'कृत्वा' शब्दस्य अर्थः भवति 'करके' । यह एक पूर्वकालिक क्रिया का रूप है ।

Step 2: Key Formula or Approach:

'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्रानुसारम्, जब एक ही कर्ता द्वारा दो क्रियाएँ की जाती हैं, तो पहले होने वाली क्रिया को व्यक्त करने के लिए धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय जोड़ा जाता है । इसका 'त्वा' शेष रहता है ।

Step 3: Detailed Explanation:

'कृत्वा' पद में 'कृ' (करना) धातु है और 'क्त्वा' प्रत्यय है ।

कृ + क्त्वा = कृत्वा (करके)

उदाहरण: सः भोजनं कृत्वा विद्यालयं गच्छति । (वह भोजन करके विद्यालय जाता है ।)

Quick Tip

जिस शब्द के अंत में '-त्वा', '-ट्वा', या '-ध्वा' ध्वनि आए, वहाँ 'क्त्वा' प्रत्यय होता है । यह 'करके' का अर्थ देता है, जैसे - पठित्वा (पढ़कर), गत्वा (जाकर) ।

7(ख)(ii). निम्नलिखित में से किसी एक पद में प्रत्यय लिखिए :
(ii) गमनीयः

उत्तर :

'गमनीयः' इति पदे 'अनीयर्' प्रत्ययः अस्ति । (धातुः - गम्)

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

अत्र प्रदत्तपदे मूलधातुः प्रत्ययश्च पृथक् करणीयौ । 'गमनीयः' शब्दस्य अर्थः भवति 'जाने योग्य' । यह 'चाहिए' या 'योग्य' के अर्थ को प्रकट करता है ।

Step 2: Key Formula or Approach:

'तव्यत्तव्यानीयर्ः' सूत्रानुसारम्, 'चाहिए' या 'योग्यता' (विधिलिङ् लकार के अर्थ) को व्यक्त करने के लिए धातु से 'अनीयर्' प्रत्यय जोड़ा जाता है । इसका 'अनीय' शेष रहता है ।

Step 3: Detailed Explanation:

'गमनीयः' पद में 'गम्' (जाना) धातु है और 'अनीयर्' प्रत्यय है ।

गम् + अनीयर् = गमनीय ।

पुल्लिङ्गे प्रथमा एकवचने 'गमनीयः' इति रूपं भवति । (स्त्रीलिङ्गे - गमनीया, नपुंसकलिङ्गे - गमनीयम्) ।

Quick Tip

जिस शब्द के अंत में 'अनीय', 'अनीया', 'अनीयम्' आए, वहाँ 'अनीयर्' प्रत्यय होता है । 'तव्यत्' और 'अनीयर्' प्रत्ययों का प्रयोग कर्मवाच्य या भाववाच्य में होता है ।

7(ख)(iii). निम्नलिखित में से किसी एक पद में प्रत्यय लिखिए :
(iii) पातुम्

उत्तर :

'पातुम्' इति पदे 'तुमुन्' प्रत्ययः अस्ति । (धातुः - पा)

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

अत्र प्रदत्तपदे मूलधातुः प्रत्ययश्च पृथक् करणीयौ । 'पातुम्' शब्दस्य अर्थः भवति 'पीने के लिए' । यह क्रिया के उद्देश्य को प्रकट करता है ।

Step 2: Key Formula or Approach:

'तुमुन्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' सूत्रानुसारम्, जब एक क्रिया दूसरी क्रिया के उद्देश्य के लिए की जाती है, तो उद्देश्यवाचक क्रिया की धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय लगता है । इसका 'तुम्' शेष रहता है ।

Step 3: Detailed Explanation:

'पातुम्' पद में 'पा' (पीना) धातु है और 'तुमुन्' प्रत्यय है ।

पा + तुमुन् = पातुम् (पीने के लिए)

उदाहरणः सः जलं पातुम् इच्छति । (वह जल पीने के लिए चाहता है ।)

Quick Tip

जिस शब्द के अंत में '-तुम्', '-टुम्', या '-ढुम्' आए, वहाँ 'तुमुन्' प्रत्यय होता है । यह 'के लिए' (for the purpose of) का अर्थ देता है ।

7(ख)(iv). निम्नलिखित में से किसी एक पद में प्रत्यय लिखिए :

(iv) सुता ।

उत्तर :

'सुता' इति पदे 'टाप्' स्त्री-प्रत्ययः अस्ति । (प्रातिपदिकम् - सुत)

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

अत्र प्रदत्तपदे मूलशब्दः प्रत्ययश्च पृथक् करणीयौ । 'सुता' एक स्त्रीलिङ्ग शब्द है, जिसका अर्थ 'पुत्री' होता है । यह 'सुत' (पुत्र) शब्द से बना है ।

Step 2: Key Formula or Approach:

'अजाद्यतष्टाप्' सूत्रानुसारम्, 'अजादि' गण में पठित तथा अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'टाप्' प्रत्यय लगाया जाता है । इसका 'आ' शेष रहता है ।

Step 3: Detailed Explanation:

'सुता' पद में 'सुत' (पुत्र) प्रातिपदिक (मूल शब्द) है। इसे स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'टाप्' प्रत्यय जोड़ा गया है।

सुत + टाप् (आ) = सुता (पुत्री)

(यहाँ 'सु' धातु से 'क्त' प्रत्यय लगकर भी 'सुत' शब्द बनता है, परन्तु 'सुता' बनाने के लिए 'टाप्' स्त्री-प्रत्यय का प्रयोग अनिवार्य है।)

Quick Tip

जब किसी अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द को स्त्रीलिङ्ग में बदलना हो, तो सामान्यतः उसके अंत में 'आ' की मात्रा लगा दी जाती है, जो व्याकरण की दृष्टि से 'टाप्' प्रत्यय का परिणाम होता है। जैसे - बालक -> बालिका, अश्व -> अश्वा।

8(क). निम्नलिखित में से किसी एक का वाच्य परिवर्तन कीजिए :

(क) अस्माभिः दुग्धं पीयते ।

उत्तर :

वयं दुग्धं पिबामः ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

प्रदत्त वाक्य 'अस्माभिः दुग्धं पीयते' कर्मवाच्ये अस्ति। अत्र कर्ता (अस्माभिः) तृतीया विभक्तौ, कर्म (दुग्धम्) प्रथमा विभक्तौ, तथा किर्या (पीयते) कर्मानुसारम् अस्ति। अस्य परिवर्तनं कर्तृवाच्ये करणीयम्।

Step 2: Key Formula or Approach:

कर्मवाच्यतः कर्तृवाच्ये परिवर्तनस्य नियमाः :

1. कर्तुः (कर्ता) प्रथमा विभक्तिः भवति। (अस्माभिः -> वयम्)
2. कर्मणः (कर्म) द्वितीया विभक्तिः भवति। (दुग्धम् -> दुग्धम्)
3. किर्यायाः रूपं कर्तुः पुरुषं वचनं च अनुसरति। ('पा' (पिब्) धातोः उत्तमपुरुष-बहुवचने रूपं 'पिबामः' भवति)

Step 3: Detailed Explanation:

कर्मवाच्यम् : अस्माभिः (तृतीया) दुग्धम् (प्रथमा) पीयते (किर्या कर्मानुसारम्)।

कर्तृवाच्यम् :

- 'अस्माभिः' इत्यस्य प्रथमा विभक्तिः, बहुवचनं 'वयम्' भवति।
- 'दुग्धम्' नपुंसकलिङ्गम् अस्ति, अतः प्रथमा-द्वितीया विभक्त्योः रूपं समानं भवति - 'दुग्धम्'।
- किर्या नूतनकर्तारं 'वयम्' (उत्तम पुरुष, बहुवचनम्) अनुसरिष्यति। 'पा' (पिब्) धातोः लट्लकारे, उत्तमपुरुषे, बहुवचने रूपं 'पिबामः' भवति।

अतः, पूर्ण वाक्यं 'वयं दुग्धं पिबामः' इति भविष्यति ।

Quick Tip

वाच्य परिवर्तन करते समय, कर्ता, कर्म और क्रिया के बीच 121 (कर्तृवाच्य -> कर्ता-1, कर्म-2, क्रिया कर्ता-1 के अनुसार) और 311 (कर्मवाच्य -> कर्ता-3, कर्म-1, क्रिया कर्म-1 के अनुसार) के नियम को याद रखें ।

8(ख). निम्नलिखित में से किसी एक का वाच्य परिवर्तन कीजिए :

(ख) सः मां पाठयति ।

उत्तर :

तेन अहं पाठये ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

प्रदत्त वाक्यं 'सः मां पाठयति' कर्तृवाच्ये अस्ति । अत्र 'पाठयति' प्रेरणार्थक क्रिया (causal verb) अस्ति । अस्य परिवर्तनं कर्मवाच्ये करणीयम् ।

Step 2: Key Formula or Approach:

कर्तृवाच्यतः कर्मवाच्ये परिवर्तनस्य नियमाः :

1. कर्तुः (कर्ता) तृतीया विभक्तिः भवति । (सः -> तेन)
2. कर्मणः (कर्म) प्रथमा विभक्तिः भवति । (माम् -> अहम्)
3. क्रियायाः रूपं कर्मानुसारं आत्मनेपदे परिवर्तते । (प्रेरणार्थक 'पठ्' (पाठि) धातोः आत्मनेपदे रूपं 'पाठयते' भवति । किन्तु कर्मानुसारम् 'अहम्', अतः क्रिया 'पाठये' भविष्यति ।)

Step 3: Detailed Explanation:

कर्तृवाच्यम् : सः (प्रथमा) माम् (द्वितीया) पाठयति (क्रिया कर्तारम् अनुसरति) ।

कर्मवाच्यम् :

- 'सः' इत्यस्य तृतीया विभक्तिः 'तेन' भवति ।

- 'माम्' इत्यस्य प्रथमा विभक्तिः 'अहम्' भवति ।

- क्रिया नूतनकर्म (अधुना कर्तृरूपेण) 'अहम्' (उत्तम पुरुष, एकवचनम्) अनुसरिष्यति । 'पाठि' धातोः कर्मवाच्ये, उत्तमपुरुषे, एकवचने रूपं 'पाठये' भवति ।

अतः, पूर्ण वाक्यं 'तेन अहं पाठये' इति भविष्यति ।

Quick Tip

प्रेरणार्थक क्रियाओं का वाच्य परिवर्तन करते समय ध्यान रखें कि क्रिया के आत्मनेपद रूप का पुरुष और वचन नए (प्रथमा विभक्ति वाले) कर्म के अनुसार बदलता है।

8(ग). निम्नलिखित में से किसी एक का वाच्य परिवर्तन कीजिए :
(ग) बालकः गीतां पठति ।

उत्तर :
बालकेन गीता पठ्यते ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

प्रदत्त वाक्य 'बालकः गीतां पठति' कर्तृवाच्ये अस्ति। अस्य परिवर्तनं कर्मवाच्ये करणीयम्।

Step 2: Key Formula or Approach:

कर्तृवाच्यतः कर्मवाच्ये परिवर्तनस्य नियमाः :

1. कर्तुः (कर्ता) तृतीया विभक्तिः भवति। (बालकः -> बालकेन)
2. कर्मणः (कर्म) प्रथमा विभक्तिः भवति। (गीताम् -> गीता)
3. क्रियायाः रूपं कर्मानुसारं आत्मनेपदे परिवर्तते। (मूलधातु + य + ते/एते/अन्ते) (पठ् + य + ते = पठ्यते)

Step 3: Detailed Explanation:

कर्तृवाच्यम् : बालकः (प्रथमा) गीताम् (द्वितीया) पठति (क्रिया कर्तारम् अनुसरति)।

कर्मवाच्यम् :

- 'बालकः' इत्यस्य तृतीया विभक्तिः 'बालकेन' भवति।
 - 'गीताम्' इत्यस्य प्रथमा विभक्तिः 'गीता' भवति।
 - क्रिया नूतनकर्म (अधुना कर्तृरूपेण) 'गीता' (प्रथम पुरुष, एकवचनम्) अनुसरिष्यति। 'पठ्' धातोः आत्मनेपदे, लट्लकारे, प्रथमपुरुषे, एकवचने रूपं 'पठ्यते' भवति।
- अतः, पूर्णं वाक्यं 'बालकेन गीता पठ्यते' इति भविष्यति।

Quick Tip

वाच्य परिवर्तन करते समय, कर्म के लिङ्ग, वचन और पुरुष का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि कर्मवाच्य में क्रिया उसी के अनुसार चलती है।

9(i). निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं तीन वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :
(i) तुम दोनों खाते हो ।

उत्तर :
युवाम् खादथः ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह एक कर्तृवाच्य का वाक्य है, जहाँ क्रिया कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार होती है।

Step 2: Detailed Explanation:

1. कर्ता (Subject): 'तुम दोनों' संस्कृत में 'युष्मद्' सर्वनाम का प्रथमा विभक्ति, द्विवचन रूप है, जो 'युवाम्' होता है। यह मध्यम पुरुष, द्विवचन का कर्ता है।

2. क्रिया (Verb): 'खाते हो' के लिए 'खाद्' धातु का प्रयोग होगा। चूँकि कर्ता ('युवाम्') मध्यम पुरुष, द्विवचन है, इसलिए क्रिया भी लट् लकार (वर्तमान काल), मध्यम पुरुष, द्विवचन में होगी। 'खाद्' धातु का यह रूप 'खादथः' होता है।

अतः, वाक्य का अनुवाद होगा : युवाम् खादथः ।

Quick Tip

संस्कृत अनुवाद में कर्ता और क्रिया के पुरुष (प्रथम, मध्यम, उत्तम) और वचन (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन) का सही मेल सबसे महत्वपूर्ण होता है। 'त्वम्' (एकवचन), 'युवाम्' (द्विवचन), 'यूयम्' (बहुवचन) मध्यम पुरुष के कर्ता हैं।

9(ii). निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं तीन वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :
(ii) हरि वैकुण्ठ में रहते हैं ।

उत्तर :
हरिः वैकुण्ठं वसति/अधिवसति ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस वाक्य में 'में' का प्रयोग है, जो सामान्यतः सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक) का सूचक है, लेकिन 'वस्' धातु के साथ कुछ उपसर्ग लगने पर नियम बदल जाता है।

Step 2: Key Formula or Approach:

1. सामान्य नियम : 'आधारोऽधिकरणम्' से आधार में सप्तमी विभक्ति होती है। इस अनुसार 'हरिः वैकुण्ठे वसति' सही है। 2. उपपद विभक्ति नियम : 'उपान्वध्याङ्वसः' सूत्र के अनुसार, यदि 'वस्' (रहना)

धातु के पहले 'उप', 'अनु', 'अधि', या 'आ' उपसर्ग लगा हो, तो आधार में सप्तमी के स्थान पर द्वितीया विभक्ति होती है।

Step 3: Detailed Explanation:

- विकल्प 1 (सप्तमी विभक्ति): 'हरि' का 'हरिः' होगा। 'वैकुण्ठ में' का 'वैकुण्ठे' (सप्तमी) होगा। 'रहते हैं' का 'वसति' होगा। वाक्य: हरिः वैकुण्ठे वसति । - विकल्प 2 (द्वितीया विभक्ति): यदि हम 'अधिवसति' (रहते हैं) का प्रयोग करें, तो 'उपान्वध्याड्वसः' सूत्र के अनुसार 'वैकुण्ठ' में द्वितीया विभक्ति लगेगी। वाक्य: हरिः वैकुण्ठम् अधिवसति ।
दोनों ही अनुवाद व्याकरण की दृष्टि से सही हैं।

Quick Tip

'वस्' धातु के साथ उपसर्गों (उप, अनु, अधि, आ) के प्रयोग पर विशेष ध्यान दें, क्योंकि यह विभक्ति को सप्तमी से द्वितीया में बदल देता है। यह अनुवाद और अशुद्धि संशोधन में अक्सर पूछा जाता है।

9(iii). निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं तीन वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :
(iii) गाँव के चारों ओर खेत हैं ।

उत्तर :

ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस वाक्य में 'चारों ओर' शब्द का प्रयोग हुआ है, जो एक उपपद है और अपने साथ एक विशेष विभक्ति का प्रयोग अनिवार्य करता है।

Step 2: Key Formula or Approach:

उपपद विभक्ति का नियम है : 'अभितः परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपि द्वितीया'। इसका अर्थ है कि अभितः (दोनों ओर), परितः (चारों ओर), समया (समीप), निकषा (निकट), हा (हाय) और प्रति (की ओर) के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

Step 3: Detailed Explanation:

1. उपपद : 'चारों ओर' के लिए संस्कृत शब्द 'परितः' है।
2. कर्म: उपरोक्त नियम के अनुसार, 'परितः' के साथ 'गाँव' (ग्राम) में द्वितीया विभक्ति लगेगी, जिससे यह 'ग्रामम्' हो जाएगा।
3. कर्ता और क्रिया : 'खेत' (बहुत से) कर्ता है, जिसका संस्कृत रूप 'क्षेत्राणि' (प्रथमा, बहुवचन) होगा। कर्ता बहुवचन होने के कारण क्रिया 'हैं' के लिए 'अस्' धातु का लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन रूप

'सन्ति' प्रयोग होगा।

अतः, वाक्य का अनुवाद होगा : ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति ।

Quick Tip

'अभितः', 'परितः', 'उभयतः' (दोनों ओर) ये तीनों शब्द बहुत महत्वपूर्ण हैं और इनके साथ हमेशा द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

9(iv). निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं तीन वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :
(iv) मोहन कलम से लिखता है ।

उत्तर :

मोहनः कलमेन लिखति ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस वाक्य में 'कलम से' का प्रयोग लिखने की क्रिया के साधन (instrument) के रूप में हुआ है, जिसके लिए करण कारक (तृतीया विभक्ति) का प्रयोग होता है।

Step 2: Key Formula or Approach:

कारक का नियम है : 'साधकतमं करणम्'। इसका अर्थ है कि क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक सहायक होता है, वह करण कहलाता है। 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र के अनुसार करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है।

Step 3: Detailed Explanation:

1. कर्ता: 'मोहन' का संस्कृत रूप 'मोहनः' होगा।

2. करण कारक : लिखने की क्रिया ('लिखति') में 'कलम' सबसे अधिक सहायक (साधन) है। अतः 'कलम' शब्द में तृतीया विभक्ति लगेगी, जिससे यह 'कलमेन' बन जाएगा।

3. क्रिया : कर्ता 'मोहनः' (प्रथम पुरुष, एकवचन) के अनुसार 'लिख्' धातु का लट् लकार रूप 'लिखति' होगा।

अतः, वाक्य का अनुवाद होगा : मोहनः कलमेन लिखति ।

Quick Tip

'से' विभक्ति चिह्न दो कारकों में आता है - तृतीया (करण कारक, साधन के अर्थ में) और पञ्चमी (अपादान कारक, अलग होने के अर्थ में)। अनुवाद करते समय वाक्य का भाव समझकर सही कारक का प्रयोग करें।

9(v). निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं तीन वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :
(v) मैं मोहन के साथ जाऊँगा ।

उत्तर :
अहं मोहनेन सह गमिष्यामि ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस वाक्य में 'के साथ' का प्रयोग हुआ है, जिसके लिए 'सह' अव्यय और उसके साथ एक विशेष विभक्ति का नियम है। यह भविष्य काल का वाक्य है।

Step 2: Key Formula or Approach:

उपपद विभक्ति का नियम है : 'सहयुक्तेऽप्रधाने'। इसका अर्थ है कि 'सह' (साथ), 'साकम्', 'सार्धम्', 'समम्' शब्दों के योग में अप्रधान (जिसके साथ क्रिया की जाए) में तृतीया विभक्ति होती है।

Step 3: Detailed Explanation:

- कर्ता: 'मैं' के लिए संस्कृत सर्वनाम 'अहम्' (उत्तम पुरुष, एकवचन) का प्रयोग होगा।
- अप्रधान कर्ता: 'मोहन के साथ' में 'मोहन' अप्रधान है। उपरोक्त नियम के अनुसार 'मोहन' शब्द में तृतीया विभक्ति लगेगी, जिससे यह 'मोहनेन' हो जाएगा। 'साथ' के लिए 'सह' अव्यय का प्रयोग होगा।
- क्रिया: 'जाऊँगा' भविष्य काल (लृट् लकार) की क्रिया है। कर्ता 'अहम्' के अनुसार 'गम्' धातु का लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन रूप 'गमिष्यामि' होगा।
अतः, वाक्य का अनुवाद होगा : अहं मोहनेन सह गमिष्यामि ।

Quick Tip

'सह' (साथ) के योग में हमेशा तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यह नियम बहुत महत्वपूर्ण है। जैसे - रामेण सह सीता गच्छति।

10(i). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संस्कृत में आठ वाक्यों में निबन्ध लिखिए :
(i) मातृभूमि:

उत्तर :
मातृभूमि:

- सा भूमिः यस्याम् वयं जन्मामः, मातृभूमिः कथ्यते।
- जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
- अस्माकं मातृभूमिः भारतवर्षम् अस्ति।

4. इयं भूमिः शस्यश्यामला, विशाला, पवित्रा च अस्ति ।
5. अस्याः उत्तरे पर्वतः हिमालयः प्रहरी इव तिष्ठति ।
6. दक्षिणदिशि हिन्दमहासागरः अस्याः चरणौ प्रक्षालयति ।
7. वयं सर्वे अस्याः पुत्राः स्मः परस्परं च भ्रातरः ।
8. मातृभूमेः रक्षणं सम्मानं च अस्माकं परमं कर्तव्यम् अस्ति ।

Solution:

Step 1: Understanding the Topic:

विषय 'मातृभूमि' है। इस पर आठ सरल और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध वाक्यों का निर्माण करना है। निबंध में मातृभूमि की परिभाषा, उसकी महानता, अपनी मातृभूमि (भारत) का वर्णन और उसके प्रति हमारे कर्तव्यों का उल्लेख होना चाहिए।

Step 2: Sentence Structure and Key Vocabulary:

- वाक्य 1: मातृभूमि की परिभाषा। (यस्याम् - जिसमें, जन्मामः - जन्म लेते हैं)
- वाक्य 2: प्रसिद्ध सूक्ति का प्रयोग। (स्वर्गादपि गरीयसी - स्वर्ग से भी बढ़कर)
- वाक्य 3: अपनी मातृभूमि का नाम। (भारतवर्षम्)
- वाक्य 4: मातृभूमि का वर्णन। (शस्यश्यामला - फसलों से हरी-भरी)
- वाक्य 5: उत्तर दिशा का वर्णन। (प्रहरी इव - पहेरेदार की तरह)
- वाक्य 6: दक्षिण दिशा का वर्णन। (चरणौ प्रक्षालयति - पैरों को धोता है)
- वाक्य 7: मातृभूमि के साथ हमारा संबंध। (अस्याः पुत्राः - इसके पुत्र)
- वाक्य 8: हमारा कर्तव्य। (रक्षणं - रक्षा, परमं कर्तव्यम् - परम कर्तव्य)

Quick Tip

निबंध लिखते समय, विषय से संबंधित किसी प्रसिद्ध सूक्ति या श्लोक की पंक्ति का प्रयोग करने से निबंध प्रभावशाली बनता है, जैसे 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'।

- 10(ii). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संस्कृत में आठ वाक्यों में निबन्ध लिखिए :
(ii) अहिंसा परमो धर्मः

उत्तर :

अहिंसा परमो धर्मः

1. "अहिंसा परमो धर्मः" इति अस्माकं देशस्य एका प्रसिद्धा सूक्तिः अस्ति ।
2. अस्यार्थः अस्ति यत् मनसा, वचसा, कर्मणा च कस्यापि जीवस्य पीडनं न करणीयम् ।
3. महात्मा गान्धी अहिंसायाः महान् पुजारी आसीत् ।
4. सः अहिंसायाः बलेन एव भारतं पराधीनतायाः पाशात् मुक्तम् अकरोत् ।
5. जैनधर्मे बौद्धधर्मे च अहिंसायाः विशिष्टं महत्त्वं वर्णितम् अस्ति ।
6. अहिंसया मानवेषु परस्परं प्रेम, सद्भावना, शान्तिः च वर्धते ।

7. यत्र अहिंसा भवति, तत्रैव धर्मः तिष्ठति ।
8. अतः सर्वैः जनैः अहिंसायाः व्रतं पालनीयम् ।

Solution:

Step 1: Understanding the Topic:

विषय है 'अहिंसा परमो धर्मः' (अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है)। इस सूक्ति पर आठ वाक्यों में निबंध लिखना है। इसमें सूक्ति का अर्थ, इसके समर्थकों (जैसे - गांधीजी), विभिन्न धर्मों में इसका स्थान और इसके लाभों का उल्लेख करना चाहिए।

Step 2: Sentence Structure and Key Vocabulary:

- वाक्य 1: सूक्ति का परिचय। (प्रसिद्धा सूक्तिः - प्रसिद्ध सूक्ति)।
- वाक्य 2: अहिंसा का अर्थ। (मनसा, वचसा, कर्मणा - मन, वचन और कर्म से)।
- वाक्य 3: प्रमुख समर्थक का उदाहरण। (महात्मा गान्धी)।
- वाक्य 4: अहिंसा का व्यावहारिक परिणाम। (पराधीनतायाः पाशात् - गुलामी की जंजीरों से)।
- वाक्य 5: अन्य धर्मों में स्थान। (जैनधर्मे, बौद्धधर्मे)।
- वाक्य 6: अहिंसा के लाभ। (प्रेम, सद्भावना, शान्तिः च वर्धते - प्रेम, सद्भावना और शांति बढ़ती है)।
- वाक्य 7: अहिंसा और धर्म का संबंध। (यत्र अहिंसा तत्र धर्मः)।
- वाक्य 8: निष्कर्ष और संदेश। (व्रतं पालनीयम् - व्रत का पालन करना चाहिए)।

Quick Tip

सूक्ति आधारित निबंधों में, पहले सूक्ति का स्रोत (यदि ज्ञात हो) और उसका शाब्दिक अर्थ बताएँ। फिर उस विचार का समर्थन करने वाले किसी महापुरुष का उदाहरण दें और अंत में वर्तमान समय में उसकी उपयोगिता बताकर निष्कर्ष लिखें।

- 10(iii). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संस्कृत में आठ वाक्यों में निबन्ध लिखिए :
(iii) परोपकारः

उत्तर :

परोपकारः

1. परेषां जनानाम् उपकारः एव परोपकारः कथ्यते ।
2. परोपकारः एकः श्रेष्ठः मानवीयः गुणः अस्ति ।
3. प्रकृतिः अपि अस्मान् परोपकारं शिक्षयति ।
4. नद्यः स्वयं जलं न पिबन्ति, अपितु अन्येभ्यः यच्छन्ति ।
5. वृक्षाः स्वयं फलानि न खादन्ति, अपितु परेभ्यः ददति ।
6. परोपकारेण मानवानां हृदये शान्तिः सुखं च जायते ।
7. समाजेऽपि परस्परं स्नेहः सहयोगश्च वर्धते ।

8. अतः उक्तम् - "परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्" ।

Solution:

Step 1: Understanding the Topic:

विषय 'परोपकार' (दूसरों का भला करना) है। इस पर आठ संस्कृत वाक्यों में निबंध लिखना है। इसमें परोपकार की परिभाषा, प्रकृति से उदाहरण, इसके लाभ और अंत में एक प्रासंगिक सूक्ति का उल्लेख करना चाहिए।

Step 2: Sentence Structure and Key Vocabulary:

- वाक्य 1: परोपकार की परिभाषा। (परेषाम् उपकारः - दूसरों का भला)।
- वाक्य 2: इसे एक श्रेष्ठ गुण बताना। (श्रेष्ठः गुणः - श्रेष्ठ गुण)।
- वाक्य 3: प्रकृति से प्रेरणा। (प्रकृतिः शिक्षयति - प्रकृति सिखाती है)।
- वाक्य 4: नदी का उदाहरण। (नद्यः - नदियाँ, अन्येभ्यः यच्छन्ति - दूसरों को देती हैं)।
- वाक्य 5: वृक्षों का उदाहरण। (वृक्षाः - पेड़, परेभ्यः ददति - दूसरों को देते हैं)।
- वाक्य 6: परोपकार का व्यक्तिगत लाभ। (शान्तिः सुखं च - शांति और सुख)।
- वाक्य 7: परोपकार का सामाजिक लाभ। (स्नेहः सहयोगश्च - स्नेह और सहयोग)।
- वाक्य 8: निष्कर्ष के रूप में एक प्रसिद्ध सूक्ति। (पुण्याय - पुण्य के लिए)।

Quick Tip

अमूर्त विषयों (जैसे - परोपकार, अनुशासन) पर निबंध लिखते समय, प्रकृति से उदाहरण (जैसे - नदी, वृक्ष, सूर्य) देना एक बहुत प्रभावी तरीका है। इससे निबंध रोचक और समझने में आसान हो जाता है।

10(iv). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संस्कृत में आठ वाक्यों में निबन्ध लिखिए :
(iv) राष्ट्रीय एकता

उत्तर :

राष्ट्रीय एकता

1. एकस्मिन् राष्ट्रे निवसन्तः जनाः यदा परस्परं स्नेहेन तिष्ठन्ति, सा राष्ट्रीय एकता कथ्यते।
2. कस्यापि राष्ट्रस्य प्रगत्यै उन्नत्यै च राष्ट्रीय एकता परमावश्यकी अस्ति।
3. अस्माकं भारतदेशे विविधाः भाषाः, धर्माः, सम्प्रदायाः च सन्ति।
4. तथापि वयं सर्वे भारतीयाः स्मः इति भावना एव एकतायाः मूलम्।
5. इयम् 'विविधतायाम् एकता' अस्माकं राष्ट्रस्य वैशिष्ट्यम् अस्ति।
6. जातिवादः, प्रान्तवादः, साम्प्रदायिकता च एकतायाः मार्गं बाधाः सन्ति।
7. अस्माभिः एताः बाधाः दूरीकर्तव्याः।
8. राष्ट्रीय-एकतायाः रक्षणम् अस्माकं सर्वेषां नागरिकणाम् कर्तव्यम् अस्ति।

Solution:

Step 1: Understanding the Topic:

विषय 'राष्ट्रीय एकता' है। इस पर आठ सरल संस्कृत वाक्यों में निबंध लिखना है। इसमें राष्ट्रीय एकता की परिभाषा, भारत के संदर्भ में इसका महत्व, इसकी बाधाएं और इसे बनाए रखने के हमारे कर्तव्य का उल्लेख होना चाहिए।

Step 2: Sentence Structure and Key Vocabulary:

- वाक्य 1: राष्ट्रीय एकता की परिभाषा। (परस्परं स्नेहेन - आपसी प्रेम से)।
- वाक्य 2: इसका महत्व। (प्रगत्यै उन्नत्यै च - प्रगति और उन्नति के लिए)।
- वाक्य 3: भारत की विविधता का वर्णन। (विविधाः भाषाः, धर्माः - विभिन्न भाषाएँ, धर्म)।
- वाक्य 4: एकता का मूलमंत्र। (वयं सर्वे भारतीयाः स्मः - हम सब भारतीय हैं)।
- वाक्य 5: 'विविधता में एकता' को भारत की विशेषता बताना। (वैशिष्ट्यम् - specialty)।
- वाक्य 6: एकता में बाधाएं। (जातिवादः, प्रान्तवादः - casteism, regionalism)।
- वाक्य 7: हमारा कर्तव्य (बाधाओं को दूर करना)। (दूरीकर्तव्याः - दूर करनी चाहिए)।
- वाक्य 8: निष्कर्ष - एकता की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। (रक्षणम् - रक्षा)।

Quick Tip

राष्ट्रीय विषयों पर निबंध लिखते समय, देश की वर्तमान स्थिति (जैसे विविधता) का उल्लेख करें, उस विषय के महत्व को बताएं, चुनौतियों को पहचानें और अंत में एक नागरिक के रूप में हमारे कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए निष्कर्ष दें।

10(v). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संस्कृत में आठ वाक्यों में निबन्ध लिखिए :
(v) संस्कृतभाषायाः महत्वम् ।

उत्तर :

संस्कृतभाषायाः महत्वम्

1. संस्कृतभाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु प्राचीना, सरला मधुरा च अस्ति ।
2. इयं भाषा 'देववाणी' अथवा 'गीर्वाणभारती' इति नाम्ना अपि प्रसिद्धा अस्ति ।
3. अस्माकं संस्कृतिः धर्मः च अस्याम् एव भाषायां निहितौ स्तः ।
4. विश्वस्य प्राचीनतमाः ग्रन्थाः चत्वारः वेदाः संस्कृते एव लिखिताः सन्ति ।
5. रामायणं, महाभारतं, पुराणानि, उपनिषदः च अस्यामेव भाषायां सन्ति ।
6. भारतस्य अनेकाः प्रादेशिकभाषाः संस्कृतभाषायाः एव उद्भूताः । अतः इयं सर्वासाम् आर्याणां भाषाणां जननी कथ्यते ।
7. अस्याः व्याकरणं पूर्णतया वैज्ञानिकं तर्कसम्मतं च अस्ति ।
8. अतः संस्कृतभाषायाः संरक्षणाय प्रचाराय च अस्माभिः सर्वैः प्रयत्नः करणीयः ।

Solution:

Step 1: Understanding the Topic:

विषय 'संस्कृत भाषा का महत्व' है। इस पर आठ सरल और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध वाक्यों का निर्माण करना है। निबंध में भाषा की प्राचीनता, इसके साहित्य, अन्य भाषाओं से संबंध और इसके वैज्ञानिक स्वरूप पर प्रकाश डालना चाहिए।

Step 2: Sentence Structure and Key Vocabulary:

- वाक्य 1: प्राचीनता और मधुरता का वर्णन। (प्राचीनता - पुरानी, मधुरा - मीठी)
- वाक्य 2: इसके प्रसिद्ध नामों का उल्लेख। (देववाणी - देवों की भाषा)
- वाक्य 3: संस्कृति और धर्म से संबंध। (संस्कृति: - culture, निहितौ स्तः - निहित हैं)
- वाक्य 4: प्रमुख ग्रंथों (वेदों) का उल्लेख। (चत्वारः वेदाः - चार वेद)
- वाक्य 5: अन्य साहित्यिक ग्रंथों का उल्लेख। (रामायणं, महाभारतं)
- वाक्य 6: अन्य भाषाओं की जननी के रूप में इसका महत्व। (जननी - माता, उद्भूताः - उत्पन्न हुईं)
- वाक्य 7: व्याकरण की वैज्ञानिकता। (वैज्ञानिकम् - scientific, तर्कसम्मतम् - logical)
- वाक्य 8: निष्कर्ष और हमारा कर्तव्य। (संरक्षणाय - रक्षा के लिए, प्रयत्नः करणीयः - प्रयास करना चाहिए)

Quick Tip

किसी भाषा पर निबंध लिखते समय उसके विभिन्न पहलुओं पर वाक्य बनाएँ, जैसे- 1. इतिहास (प्राचीनता), 2. साहित्य (ग्रंथ), 3. प्रभाव (अन्य भाषाओं की जननी), 4. संरचना (व्याकरण), 5. हमारा कर्तव्य (संरक्षण)।

11(i). निम्नलिखित पदों में से किन्हीं दो पदों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(i) प्रातः

उत्तर :

अहं प्रातः पञ्चवादने उत्तिष्ठामि। (मैं सुबह पाँच बजे उठता हूँ।)

Solution:

Step 1: Understanding the Word:

'प्रातः' एक कालवाचक अव्यय है जिसका अर्थ होता है 'सुबह' (in the morning)। अव्यय होने के कारण इसका रूप नहीं बदलता।

Step 2: Sentence Construction:

'प्रातः' का प्रयोग किसी सुबह की जाने वाली क्रिया के साथ आसानी से किया जा सकता है।

- कर्ता: अहम् (मैं)

- अव्यय : प्रातः (सुबह)

- क्रिया : उत्तिष्ठामि (उठता हूँ - 'उत् + स्था' धातु, लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन)

यह एक सरल और स्वाभाविक वाक्य है।

Quick Tip

अव्यय पदों (जैसे - प्रातः, सायम्, अत्र, तत्र, सर्वदा, च, अपि) का वाक्य प्रयोग करना बहुत आसान होता है क्योंकि इनके रूप कभी नहीं बदलते और इन्हें वाक्य में आसानी से फिट किया जा सकता है।

11(ii). निम्नलिखित पदों में से किन्हीं दो पदों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए :
(ii) मधुरम्

उत्तर :

कोकिलः मधुरं गायति । (कोयल मीठा गाती है।)

Solution:

Step 1: Understanding the Word:

'मधुरम्' शब्द विशेषण और क्रियाविशेषण दोनों रूपों में प्रयुक्त हो सकता है। यहाँ 'गायति' (गाती है) क्रिया की विशेषता बताने के कारण यह क्रियाविशेषण (adverb) है। क्रियाविशेषण नपुंसकलिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन में होता है।

Step 2: Sentence Construction:

'मधुरम्' का प्रयोग किसी क्रिया (जैसे - गाना, बोलना) की विशेषता बताने के लिए किया जा सकता है।

- कर्ता: कोकिलः (कोयल)

- क्रियाविशेषण : मधुरम् (मीठा)

- क्रिया : गायति (गाती है)

यह वाक्य व्याकरण की दृष्टि से सही है।

Quick Tip

जब कोई विशेषण क्रिया की विशेषता बताता है तो वह क्रियाविशेषण बन जाता है और उसे हमेशा नपुंसकलिङ्ग, द्वितीया विभक्ति, एकवचन में रखा जाता है। जैसे - सः शीघ्रं धावति।

11(iii). निम्नलिखित पदों में से किन्हीं दो पदों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए :
(iii) एकः

उत्तर :

तत्र एकः विशालः वृक्षः अस्ति । (वहाँ एक विशाल पेड़ है।)

Solution:

Step 1: Understanding the Word:

'एकः' संख्यावाची विशेषण 'एक' का पुल्लिंग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन का रूप है। इसका अर्थ है 'एक'।

Step 2: Sentence Construction:

'एकः' का प्रयोग किसी पुल्लिंग, एकवचन संज्ञा के विशेषण के रूप में किया जाएगा।

- अव्यय : तत्र (वहाँ)
- विशेषण : एकः (एक), विशालः (विशाल)
- संज्ञा (कर्ता): वृक्षः (पेड़)
- क्रिया : अस्ति (है)

यहाँ 'एकः' और 'विशालः' दोनों 'वृक्षः' के विशेषण हैं।

Quick Tip

संख्यावाची विशेषणों का प्रयोग करते समय उनके लिङ्ग का ध्यान रखें। 'एकः' (पुल्लिंग), 'एका' (स्त्रीलिंग), 'एकम्' (नपुंसकलिङ्ग)। विशेषण हमेशा विशेष्य (संज्ञा) के लिङ्ग, वचन और विभक्ति के अनुसार होता है।

11(iv). निम्नलिखित पदों में से किन्हीं दो पदों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(iv) क्रीडति

उत्तर :

बालकः कन्दुकेन क्रीडति। (बालक गेंद से खेलता है।)

Solution:

Step 1: Understanding the Word:

'क्रीडति' 'क्रीड' (खेलना) धातु का लट् लकार (वर्तमान काल), प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप है। इसका अर्थ है 'खेलता है'।

Step 2: Sentence Construction:

चूँकि 'क्रीडति' प्रथम पुरुष, एकवचन की क्रिया है, हमें इसके लिए एक कर्ता चाहिए जो प्रथम पुरुष, एकवचन हो (जैसे - सः, बालकः, रामः)।

- कर्ता: बालकः (बालक)
- करण : कन्दुकेन (गेंद से)
- क्रिया : क्रीडति (खेलता है)

यह वाक्य व्याकरण के नियमों के अनुसार पूर्णतः शुद्ध है।

Quick Tip

जब क्रियापद का वाक्य में प्रयोग करना हो, तो सबसे पहले उसका पुरुष और वचन पहचानें। फिर उसी के अनुरूप कर्ता का चयन करके एक सरल वाक्य बनाएँ।